Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-20
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 01 अगस्त से 07 अगस्त 2018 तक
श्रावण कृष्ण चतुर्थी से श्रावण एकादशी तृतीया 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

स्वामी विवेकानन्द... पृष्ठ- 3

गलत परवरिश का.. पृष्ठ- 3

डायबिटीज में करें.. पृष्ठ- 4

शिव अपराध समापन... पृष्ठ- 8

दरबारी प्रवृत्ति से... पृष्ठ- 12

- अंधविश्वास की बेड़ियों में जकड़ा समाज
- संविधान नही आस्थाओं के व्यापार पर संकट"
- प्रफुल्लचन्द्र चाकी के बलिदान का उद्देश्य
- आवश्यकता है संविधान सम्मत भारतीय अर्थनीति पर पुनर्विचार की

भारतीय मूल के अमेरिकी उत्तम ढिल्लों को बनाया गया ड्रग एनफोर्समेंट एजेंसी का प्रमुख

हिन्दू महासभा ने बधाई दी

● संवाददाता ●

व्हाइट हाउस के शीर्ष वकील भारतीय मूल के अमेरिकी उत्तम ढिल्लों को ड्रग एनफोर्समेंट एजेंसी का नया प्रमुख नियुक्त किया गया है। यह संस्था अमेरिका में मादक पदार्थो की तस्करी एवं इसके इस्तेमाल के खिलाफ कार्य करती है। ढिल्लों ने राबर्ट पैटरसन का स्थान लिया है। ३० साल की सेवा के बाद पैटरसन सेवानिवृत्त हुए हैं। ढिल्लों ने व्हाइट हाउस में उप वकील एवं राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के उप सहायक के तौर पर शेष पृष्ठ 11 पर

New Acting Director of Drug Enforcement Agency (DEA), United State

Uttam Dhillon

शेर-ए-कश्मीर यूनिवर्सिटी में राष्ट्रगान के समय बैठे रहे छात्र

राष्ट्रगान का अपमान करने वालों पर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा चले–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

शेर-ए-कश्मीर यूनिवर्सिटी में दीक्षांत समारोह में जब राष्ट्रगान चल रहा था तो कुछ छात्र–छात्राओं ने उसके सम्मान में खड़े होने की परंपरा का पालन ही नहीं किया। वे जैसे–तैसे अपनी सीट पर बैठे रहे। समाचार एजेंसी एएनआई के मुताबिक दीक्षांत समारोह में सैकड़ों छात्र–छात्राएं मौजूद थे। जब राष्ट्रगान हो रहा था तब कई छात्र–छात्राएं अपने आप उठकर खड़े हो गए। एजेंसी ने इसका एक वीडियो भी जारी किया है। यूनिवर्सिटी ने हालांकि बयान जारी कर कहा कि यह वीडियो फेक है। राष्ट्रगान के समय सभी छात्र व आगंतुक सम्मान में खड़े होने की परंपरा का पालन कर रहे थे। यह तब है जब मई में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शेर–ए–कश्मीर यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज ऐंड टेक्नॉलजी के दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग ले चुके हैं। उन्होंने कहा था–मैं खुश हूं कि आज ४०० से ज्यादा छात्रों को मेडल और उपाधियां प्रदान की गई। इस दौरान पीएम मोदी लेह में एशिया की सबसे बड़ी सुरंग जोजिला की आधारशिला रखने के बाद सीधे कश्मीर पहुंचे थे। जम्मू कश्मीर सरकार ने २०१६ में राष्ट्र विरोध गतिविधियों में कथित तौर पर संलिप्त १२ अधिकारियों को सेवा से बर्खास्त कर शेष पृष्ठ 11 पर

स्वामी विवेकानद के कुछ पावन प्रसंग

यों बने नरेन्द्र सन्यासी

गुरू रामकृष्ण परमहंस के ब्रह्मलीन होने से थोड़े पहले की बात है। वें अस्वस्थ थे उन्होंने अपने उन बारह शिष्यों को बुलाया जो घर छोड़कर सन्यासी बनने उनके पास आए थे। गुरुदेव ने उनसे कहा अब मैं तुम्हें दीक्षा दूंगा। इन बारह रत्नों में एक रत्न नरेन्द्र भी थे। इन सभी को गेरुए वस्त्र पहनाकर गुरुदेव ने उनसे कहा कि वे बस्ती में जाकर भिक्षा मांगकर लायें। सभी शिष्य खुशी–खुशी कंधे पर झोली लटकाकर भिक्षा मांगने निकल फड़े। न कोई शर्म और न कोई झिझक परिजनों एवं मित्रों की आंखे डबडबा गईं लेकिन ये तरुण किंचित भी विचलित नहीं हुए। प्रथम भिक्षाटन से प्राप्त अन्न से बनी रोटी का प्रसाद गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस ने भी ग्रहण किया, हांलाकि गले में कैंसर के कारण वे खाना नहीं खा सकते थे। गुरुदेव को भोजन ग्रहण करते देख नरेन्द्र सहित सभी तरूण सन्यासी बहुत प्रसन्न थे।

नहीं चाहिए सिद्धियाँ

स्वामी विवेकानन्द अपने गुरुदेव द्वारा बताए साधना मार्ग पर कठिन साधना के साथ अग्रसर थे। कभी–कभी तो वे पूरी रात ही ध्यान में बिता देते। गुरुदेव ने एक दिन उन्हें बुलाकर कहा कि कठिन साधना से मुझे अष्टसिद्धियाँ प्राप्त हुईं थीं, जिनके उपयोग करने की उन्हें कभी जरूरत ही नहीं पड़ी। मैं ये सिद्धियाँ तुम्हें देता हूँ तुम्हारे काम आएंगी। विवेकानन्द ने जिज्ञासा के साथ पूछा कि क्या इन सिद्धियों से उन्हें ईश्वर प्राप्ति में मदद मिलेगी। गुरुदेव द्वारा नहीं कहने पर उन्होंने विनम्रता के साथ ऐसी सिद्धियों से दो टूक इंकार कर दिया।

उसे कहते हैं ज्ञानवान!

स्वामी विवेकानन्द अपनी बात बहुत सटीक तरीके से कहा करते थे। सहज समझ में आ जाने वाले उदाहरण देते थे। एक बार विदेशी शिष्यों ने उनसे ज्ञानी के लक्षण जानने चाहे। विवेकानन्द ने छोटे बच्चे को प्रतीक बनाकर कहा कि बच्चे में आसक्ति नहीं होती। वह मिट्टी का घर बनाता है और कोई उसको हाथ लगा दे तो रोने, चिल्लाने, पैर पटकने लगता है और थोड़ी देर में स्वयं उसको तहस–नहस कर दे तो हँसते–हँसते जैसे तहस–नहस करके कोई बड़ा काम कर दिया हो। वह कोई वस्तु लिए बैठा हो। कोई मांग ले तो साफ मना, छीनने का प्रयास करे तो वही रोना मचलाना। इस पर कोई नया खिलौना बता दे तो उसे लेने के लिए पहले वाली वस्तु फेंकते देर नहीं लगाता, पल में रूठना तो पल में राजी। अतः ज्ञानी वही है जिसमें बच्चे की भाँति निर्आसक्ति है।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : घर में स्वच्छ व सुन्दर माहौल बनायें रखने के लिए, अपने अहंकारी स्वभाव पर नियन्त्रण रखें। परिवार का सुख व सहयोग मिलता रहेगा जिसके कारण आप हताश नहीं होंगे। आप यदि गैर सरकारी संस्था बनाने चाहते है, तो किसी नजदीकी व्यक्ति को महत्वपूर्ण पद न दें।

वृष : आपका हर कदम महत्वपूर्ण है इसलिए जो भी करें सोंच–समझकर ही करें तो बेहतर रहेगा। नयें सम्बन्धों के प्रति मन में उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते है। जो लोग किसी यात्रा पर जा रहें, उन्हे दूसरों के साथ मिलकर रहना ही लाभकारी रहेगा।

मिथुन : कुछ नयें लोगों से जान–पहचान बढ़ेगी जिससे आगामी समय में ये लोग आपके काम आ सकते है। आप–अपनी सन्तान के विवाह को लेकर काफी चिन्तित रहेंगे। जीवन साथी के प्रति कुछ उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते है। जरूरी कार्यो के प्रति लापरवाही उचित नहीं है।

सिंह : जीवन परमात्मा है, आपको जिन्दगी की धारा के साथ होने की जरूरत है। आप किसी भी चीज को जीतने का भाव छोड़े क्योंकि बिना होश के कुछ भी जीता हुआ हार के समान है। नवयुवकों को अत्यधिक परिश्रम करने पर ही धन की प्राप्ति होगी।

कर्क : इस सप्ताह आपको–अपने कार्यो में चुनौतियों के लिए तैयार रहना होगा। घर–गृहस्थी की समस्यायें आपको घेरे रहेंगी। जिससे आपका मानसिक सन्तुलन बिगड़ सकता है। किसी से मुकाबला न करके स्वंय को मजबूत करने का दृष्टिकोण अपनायें।

कन्या : आप शान्त बनें रहने के कारण आप सम्बन्धों एंव सम्पत्ति के मामलें में भाग्यशाली रहेंगे। कुछ गुप्त विरोधी आपके सामने समस्यायें खड़ी कर सकते है। माता का स्वास्थ्य खराब होने की आशंका है। प्रेम के मामलें में किया प्रयास सार्थक सिद्ध होगा।

तुला : व्यवसाय में दूरदर्शिता बनायें रखने की आवश्यकता है। किसी भी योजना को बनायें परन्तु उसे गुप्त रखना अपरिहार्य है। कुछ नयें लोगों से जान–पहचान बढ़ेगी जिससे आगामी समय में ये लोग आपके काम आ सकते है। अस्थमा वाले रोगी अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

वृश्चिक : इस सप्ताह कुछ लोगों की व्यवसायिक गतिविधियों में प्रगति होगी। रोजी व रोजगार के नयें अवसर प्राप्त होंगे। परिवार के सदस्यों के साथ थोड़ी तीखी झड़प होने के आसार है। छात्रों के लिए उचित समय है, अतः अवसरों का लाभ अठाने में कोई कोताही न बरतें।

धनु : इस वक्त परिवार के सभी सदस्यों के साथ प्रेम पूर्वक भोजन ग्रहण करें, जिससे आपसी मतभेद दूर हो सकता है। वृद्ध व्यक्ति अपनी दिनचर्या अत्यधिक व्यस्त रखने का प्रयास करें तभी मन शान्त रहेगा। कुछ कार्यो के सफल होन से मानसिक उर्जा में वृद्दि होगी।

मकर : इस समय आप जिसे बहुत चाहते है, उनके लिये सब कुछ करने को तैयार रहेंगे। परिवार मे दुख दर्द से भरा माहौल रहने की आशंका है। धन से सम्बन्धित लम्बित मामलों में प्रगति होने के आसार है। आर्थिक मामलों में सावधानी अपेक्षित है अन्यथा समस्याओं से घिर सकते हैं।

कुम्भ : इस समय सन्तान के व्यवहारिक पक्ष पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। परिवार का सुख व सहयोग मिलता रहेगा जिसके कारण आप हताश नहीं होंगे। जॉब वाली महिलायें समय का प्रबन्धन अवश्य करें अन्यथा बॉस से सहयोग की उम्मीद न करें।

मीन : इस सप्ताह मित्रों के साथ अत्यधिक समय न बितायें अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन में तनाव उत्पन्न होने की आशंका है। ऑफिस में कई तरह के लोग होते है। सभी लोंगो के साथ सामंजस्य बनायें रखें अन्यथा सहकर्मियों के साथ खटपट हो सकती है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्री त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग

महाराष्ट्र के नासिक जिले में दक्षिण की गंग मानी जाने वाली पुण्यलील गोदावरी के तट पर श्री त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग बिराजमान है। सृष्टि के सर्जन, पालन एवँ संहार के कारणभूत त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु एवँ रुद्र के तीनों स्वरूप एक साथ बिराजमान है। इन तीनों देवताओं की शक्ति का मूल स्रोत भगवान शिव होने का कारण उन्हें त्र्यंबक कहा जाता है। यहीं पर महर्षि गौततम एवँ सती अहल्या का आश्रम था। महर्षि गौतम ने शिव की आराधना करके उनको प्रसन्न किया था। भगवान शिव के साथ त्रिपुर दहन की बड़ी ही रोचक और रूपकात्मक कथा जुड़ी हुई है। यह पुरा संसार त्रिणुणात्मक है। जैसे कि सत्वगुण–रजोगुण–तमोगुण; वर्तमान–भूतकाल–भविष्य; भूर्लोक–भूवर्लोक–स्वर्लोक; उच्च–मध्यम–कनिष्ठ इत्यादि। त्रिगुणात्मक संसार चक्र में मनुष्य जीवन पर्यंत फंसा रहता है। भगवान शिव स्वयं त्रिगुणातीत है। उनके शरण में गये मनुष्य का उद्धार अवश्य करते है। भगवान शिव को उनका प्रिय त्रिदल बिल्वपत्र समर्पित करें एवँ प्रार्थना करें, "हे त्रिपुरारी भगवान शिव! आप हमारे मन में रहते काम, क्रोध एवँ ईर्ष्या जैसे असुरों का दहन करें और आपके शरण में रहने की प्रेरणा दें।"

श्रीमद्भगवत गीता

यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।।

यज्ञ, दान और तपरूप कर्म त्याग करने के योग्य नहीं है, बल्कि वह तो अवश्य कर्तव्य है; क्योंकि यज्ञ, दान और तप–ये तीनों ही कर्म बुद्धिमान् पुरुषों को पवित्र करने वाले हैं।।५।।

एतान्यपि तु कर्माणि सडंग त्यक्त्वा फलानि च्
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्रितं मतमुत्तमम्।।

इसलिये हे पार्थ! इन यज्ञ, दान और तपरूप कर्मों को तथा और भी सम्पूर्ण कर्तव्यों कर्मों को आसक्ति और फलों का त्याग करके अवश्य करना चाहिये, यह मेरा निश्चय किया हुआ उत्तम मत है।।६।।

नियतस्य तु सन्न्यासः कर्मणो नोपपद्यते।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः।।

(निषिद्ध और काम्य कर्मों का तो स्वरूप से त्याग करना उचित ही है) परन्तु नियत कर्म का स्वरूप से त्याग करना उचित नहीं है। इसलिये मोह के कारण उसका त्याग कर देना तामस त्याग कहा गया है।।७।।

दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत्।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत्।।

जो कुछ कर्म है वह सब दुःख रूप ही है– ऐसा समझकर यदि कोई शारीरिक क्लेश के भय से कर्तव्य कर्मों का त्याग कर दे, तो वह ऐसा राजस त्याग करके त्याग के फल को किसी प्रकार भी नहीं पाता।।८।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 01 अगस्त से 07 अगस्त 2018 तक

अध्यक्षीय

अंधविश्वास की बेड़ियों जकड़ा समाज

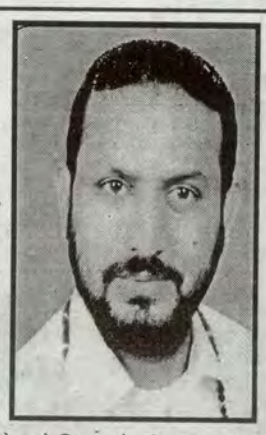

दिल्ली के बुराड़ी नगर में एक ही परिवार के ११ लोगों की मौत का मामला उलझता जा रहा है। मृतकों के परिजनों को संदेह है कि यह हत्या का मामला है, हालांकि पुलिस इसे अब तक सामूहिक आत्महत्या मान रही है। जो अंधविश्वास के कारण की गई है। भारत में यह अपनी तरह का अनोखा मामला है, लेकिन ऐसी घटनाएं पहले भी हुई हैं। जिनमें सर्वाधिक भयावह गुआना की घटना है। जहां १८ नवंबर १९७८ को जोन्सटाउन शहर में ९१८ लोगों ने धर्मगुरु जिम जोन्स के कहने पर सामूहिक आत्महत्या की थी, इसमें ३०४ बच्चे भी शामिल थे। अतिधार्मिक या धर्मभीरू लोगों को यह विश्वास दिलाना आसान होता है कि जीवन कुछ नहीं है, सब कुछ मृत्यु है या मृत्यु के वक्त अलौकिक–दिव्य शक्ति के दर्शन होंगे या भगवान आकर तुम्हें बचा लेंगे। दिल्ली की घटना में भाटिया परिवार के साथ भी ऐसा ही कुछ घटित होने का अनुमान है, क्योंकि पुलिस ने जो रजिस्टर बरामद किए हैं, उसमें इसी तरह के अंध विश्वास से भरे संदेश लिखे हुए हैं। रजिस्टर में बरगद की पूजा, वट सावित्री पूजा का जिक्र है जो पूर्णिमा पर की जाती है और यह महज संयोग नहीं हो सकता कि २७–२८ जून की दरम्यानी रात जब इन ११ लोगों की मौत हुई थी, तो वह पूर्णिमा की ही रात थी। बहरहाल इस हत्या या सामूहिक आत्महत्या कांड की जब सारी गुत्थी सुलझेगी तो ही सच सामने आएगा। लेकिन अगर यह अंधविश्वास से प्रेरित होकर की गई आत्महत्या थी, तो अब समाज को सचेत होने की जरूरत है। भारत में अंधविश्वास की जड़ें पहले ही बहुत मजबूती से जमी हुई हैं। अक्सर इसे धर्म की चाशनी में लपेट कर परोसा जाता है और धर्मभीरू लोग इसे खारिज करने से डरते हैं। धर्म और राजनीति का यह कारोबार तब तक फलेगा–फूलेगा, जब तक अंधविश्वास कायम रहेगा। इसलिए विज्ञान की शिक्षा और वैज्ञानिक नजरिए को हतोत्साहित करने का षडयंत्र भी खूब रचा जाता है। बीते चार सालों में ही इसके कई उदाहरण सामने आए हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गणेश जी का जिक्र कर उसे प्लास्टिक सर्जरी से जोड़ दिया। उत्तरप्रदेश के उपमुख्यमंत्री दिनेश शर्मा ने सीता को पहली टेस्टटयूब बेबी तक कह डाला। त्रिपुरा के मुख्यमंत्री विप्लव देव ने महाभारत काल में इंटरनेट का जिक्र किया और मानवसंसाधन विकास राज्य मंत्री सत्यपाल सिंह डार्विन के सिद्धांत को गलत बतलाते हैं। जिस देश के प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, मंत्री इस तरह की काल्पनिक बातें करेंगे वहां विज्ञान की शिक्षा का क्या हश्र होगा, यह सोचकर डर लगता है। हमारी शिक्षा व्यवस्था भी ऐसी है कि केवल अंक हासिल करने पर जोर रहता है, मौलिक सोच को अक्सर खारिज कर दिया जाता है। इसलिए बच्चे भी विज्ञान को अंक हासिल करने वाले विषय की तरह ही पढ़ते हैं। विज्ञान का आनंद, नई खोज और आविष्कारों की ललक यह सब नई पीढ़ी में बहुत कम नजर आता है। तिस पर सदियों से चले आ रहे अंधविश्वास दिमाग पर और हावी हो जाते हैं। आज भी बिल्ली का रास्ता काटना या फलाने दिन नाखून नहीं काटना, ढिकाने दिन बाल नहीं काटना जैसी दकियानूसी बातों को आंख मूंदकर मान लिया जाता है। यह सोचकर कि इतना सा मान लेने पर क्या हर्ज है। लेकिन यह बात इतनी सी नहीं रहती। अंधविश्वास कब बढ़ते–बढ़ते मानसिक रोग बन जाए, कहा नहीं जा सकता। इसका अंजाम कभी इंसान की बलि के रूप में सामने आता है तो कभी सामूहिक आत्महत्या के रूप में। इसलिए बेहतर है कि समाज वैज्ञानिक नजरिए को बढ़ावा दे।

राष्ट्रीय उद्‌बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

गलत परवरिश का ही है नतीजा

फिर वैसी ही हैवानियत की खबर, फिर वही पीड़िता के कभी न भरने वाले जख्म, फिर वही सोशल मीडिया पर निंदा का दौर, फिर वही राजनेताओं के पार्टी के झंडों–कार्यकताओं के हुजूम के साथ दौरे, फिर वही दिलासा, सांत्वना, दोषियों को सजा मिलेगी जैसे वादे, फिर वही मुआवजे का खेल, फिर वही राजनीतिक आरोप–प्रत्यारोप और फिर वही सड़कों पर जनता का जुलूस। अब इस फिर वही को आप किसी भी संदर्भ में पढ़ लें। दिल्ली, उन्नाव, कठुआ, मंदसौर शहर कोई भी होए अपराध एक जैसा ही है। दिल्ली–उन्नाव की शिकार युवतियां थीं, कठुआ–मंदसौर में सात–आठ साल की बच्चियां। शहर, उम्र, धर्म कोई भी हो, थी तो लड़कियां ही। वही लड़कियां, जिनकी बुनावट में प्रकृति ने शारीरिक संरचना के अलावा लड़कों से कोई अंतर नहीं रखा। उनके पास भी वही दिल और दिमाग है, जो लड़कों में होता है। वे भी वो सारे काम कर सकती हैं, जो लड़के करते हैं। पहाड़ चढ़ना हो, या गाड़ी चलाना हो या कुश्ती लड़ना हो या युद्ध लड़ना हो, डाक्टर– इंजीनियर हो या ठेले पर अंतरिक्ष यात्री बनना सामान बेचना हो। लड़कों के लिए सुरक्षित–आरक्षित सारे काम लड़कियां कर सकती हैं और यह उन्होंने बार–बार सिद्ध किया है। लेकिन प्रकृति द्वारा दी गई इस बराबरी का अपमान करते हुए, लड़के–लड़कियों में भेद किया जाने लगा। उनके लिए घर–परिवार की चौखट, लक्ष्मण रेखा जैसे अतार्किक मिथक गढ़े जाने लगे। संस्कार, लज्जा, मयार्दा जैसे शब्दों का पहाड़ लड़कियों के सिर पर खड़ा कर दिया गया, ताकि उनका सिर–कंधे–गर्दन झुक ही जाएं, कभी उठे नहीं। लड़कियों को दबाकर पुरुष प्रधान समाज को अपनी प्रधानता बनाए रखने में सहूलियत होती है। अपनी सहूलियत को थोड़ा सभ्य दिखाने के लिए कुछ पाखंड भी रचे गए। जैसे आदर्श पुरुष, रक्षा का वचन देने वाला भाई और न जाने क्या–क्या। रावण ने सीता को हरने का पाप किया था, लेकिन उन्हें इज्जत के साथ लंका में रखा था। पर क्या असल जीवन में भी खलनायक रावण जैसे होते हैं। वो तो अपने दस चेहरे दुनिया को दिखाता था, यहां हर चेहरे के पीछे कितने भेड़िए छिपे हैं, यह नजर ही नहींआता। समाज की मानसिकता इन चेहरों को छिपाने में मददगार साबित होती है। दिल्ली से लेकर मंदसौर तक बलात्कार की घटनाओं पर मोमबत्ती लेकर निकलने वाले समाज को अब अपनी मानसिकता पर भी विचार करना चाहिए। सरकारें आती–जाती रहती हैं, इसलिए सरकार से सुरक्षा की उम्मीद बेकार है। आज के हुक्मरान कहीं मामा बनकर लड़कियों के हितैषी बने हैं, तो कहीं ५६ इंच की छाती जैसे भद्दे वाक्य बोलकर अपनी वीरता का मौखिक प्रदर्शन कर रहे हैं। क्या केवल जनप्रतिनिधि और सत्ता में होने के नाते इन पर यह जिम्मेदारी नहीं है कि वे आम जनता की हिफाजत करें, इसके लिए पुरुषवादी संवाद बोलकर क्या ये पुरुषप्रधान समाज को ही बढ़ावा नहीं दे रहे हैं। इसके बाद भी तो बेटियां असुरिक्षत हैं, दिल दहलाने वाले हादसे हो रहे हैं। जिन घटनाओं के बारे में पढ़कर–तस्वीरें देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं, उनकी पीड़िताओं पर क्या बीतती होगी, इसकी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन हैरत है कि इन भयावह घटनाओं पर भी राजनीति के खेल चालू हैं। क्या वाकई एक समाज के रूप में हमारा इतना पतन हो चुका है कि अब राजनीति हमारी भावनाओं के साथ खुला खेल खेलने लगी है और हमने अपना जमीर उसके हाथों गिरवी रख दिया है। भारत लड़कियों के लिए दुनिया का सबसे असुरक्षित देश है, इस रिपोर्ट पर भी आत्ममंथन की जगह राजनीति से प्रेरित सवाल उठाए जा रहे हैं। सवाल तो समाज को अब अपने आप से करना चाहिए कि कब तक हम एक बेटा तो होना ही चाहिए वाली मानसिकता में जिएंगे। मांएं सोचें कि वे अपने राजा बेटा को किस तरह की परवरिश दे रही हैं, कहीं उनकी आंखों का तारा, किसी के लिए दुरूस्वप्न तो नहीं बन रहा। बलात्कार जैसे अपराध केवल कानून से नहीं समाज की मानसिकता बदलने से रोके जा सकते हैं। समाज खुद को बदलने के लिए मोमबत्ती का जुलूस जरूर निकाले।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव
E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

डायबिटीज में करें प्राकृतिक उपचार

सप्ताह में २–३ बार पानी की चादर की लपेट, २–३ बार भाप स्नान या धूप स्नान करें, उसके बाद खूब ठंडे पानी से स्नान करें। **यदि डायबिटीज पेशेन्ट ज्यादा कमजोर है, व्यायाम नहीं कर सकता तो उसे मालिश भी दी जा सकती है।** मालिश करके स्नान प्रतिदिन कराया जाए। **व्यायाम व तीव्र गति से टहलना ही मधुमेह का एकमात्र उपचार है,** अतः जब तक रोगी कमजोर है तब तक उसे मालिश करें और जैसे–जैसे शक्ति बढ़ती है तो कुछ टहलना और व्यायाम शुरू करवाना चाहिए।

आसनों में–उत्तानपादासन, हलासन, भुजंगासन, शलभासन, मण्डूकासन, पश्चिमोत्तनासन, सत्स्यासन, उड्डियान बंध, कपालभाति जो भी सरलतापूर्वक कर सकें करें यही उत्तम है।

माईट्रल-स्टैनोसिस (जटिल हृदय रोगोपचार)

❖ सितोपलादि चूर्ण+विषाणयोग + शृंग भस्म + अर्जुन चूर्ण बराबर मात्रा में मिलाकर रखें और रोजाना दिन में तीन बार शहद के साथ १–१ चम्मच लें।

❖ वासा घनवटी + जीवित प्रदावटी ३–३ गोली दिन में २ बार पानी से।

❖ अग्नितुण्डी वटी २–२ गोली, भोजन से पहले दिन में २ बार।

❖ वासावलेह १० उह अर्जुनारिष्ट १० उस २ बार भोजन के आधा घंटा बाद।

❖ विरेचन हेतु (कब्ज न रहे)–सुखविरेचन चूर्ण या त्रिफला चूर्ण रात को पानी या दूध से लें।

हृदय रोग में जल चिकित्सा

रक्तस्रोत की पुष्टिदायक एवं रक्तशोधक आहार एवं आँतों की सफाई ही हृदय रोग का भी उपचार है अतः पेडू पर मिट्टी की पट्टी, नींबू के पानी का एनिमा लेकर पेट की सफाई कर लीजिए। सुबह–शाम कम से कम दो बार छाती की सहज लपेट (हल्की लपेट) अथवा पेट की लपेट

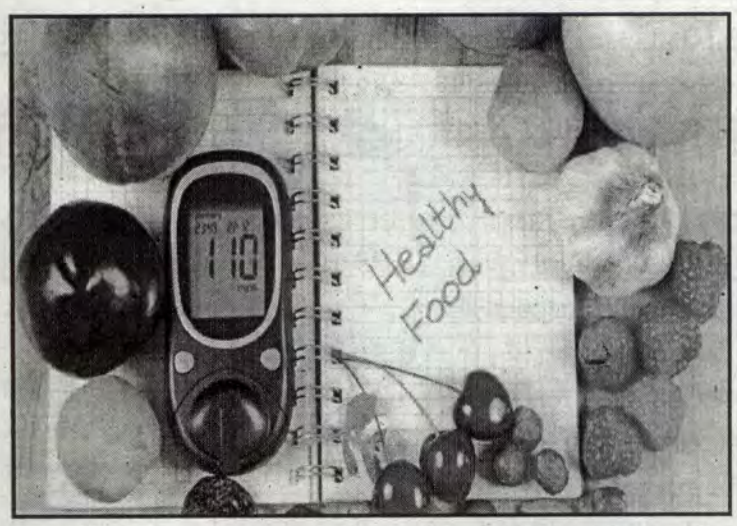

१–१ घंटे के लिए दी जाए। दोनों समय ठण्डे पानी से स्नान या ठण्डी तौलिया के घर्षण स्नान से कार्यक्षमता बढ़ती है।

जब हृदय की धड़कन तेज हो उस समय ३–४ तह की मोटी कपड़े की पट्टी ठण्डे पानी में भिगोकर दिल (छाती) के ऊपर रखी जाए तो बहुत लाभ होता है। ठण्डे पानी का स्पर्श ही हृदय को शक्तिशाली बनाता है, परन्तु परन्तु जब धड़कन स्वाभाविक स्थिति से कम चल रही हो तो रीढ़ के ऊपर ठण्डे पानी की सहनशीलता धीरे–धीरे बढ़ानी चाहिए, एकदम ठण्डा न अनुकूल पड़े तो पहले मामूली (सामान्य) ठण्डा पानी प्रयोग करें, किन्तु सर्द मौसम में गरम पानी की लपेट करें।

हृदय की तेज धड़कन में, हृदय के विस्तार यानी जब हृदय बढ़ गया हो, उसमें भी ठण्डे पानी की पट्टी या छाती की ठण्डी लपेट बहुत लाभ पहुँचाती है।

गरम-ठण्डी सेंक २ बार गरम एक बार ठण्डा के अनुपात से या ३:५ के अनुपात से करना चाहिए। इससे धड़कन स्वाभाविक अवस्था में आ जाती है। श्वास, खाँसी का कष्ट भी हृदय रोगी को हो जाता है जिसे हृदय रोग का दमा कहते हैं। इस अवस्था में ६–८ मिनटों का गरम पैरों का स्नान देने से लाभ होता है। ध्यान रखें कि कोई भी गरम प्रयोग देने के साथ सिर ठण्डे पानी से ध ोकर, सिर पर ठण्डी पट्टी तथा हृदय पर ठण्डी पट्टी रखनी चाहिए।

कब्ज नाशक प्राकृतिक उपचार

पेट पर मिट्टी की पट्टी, पेट की गरम–ठण्डी सेंक, पेट की मालिश, एनिमा (नींबू पानी का), ठण्डे पानी का हिपबाथ, पुरानी व नई कब्ज दोनों के लिए उपयोगी है। रात को सोते समय पेट की लपेट रात भर के लिए बाँधनी चाहिए। ऐसा तब तक करें जब तक कि शौचादि निवृत्ति नियमित ना हो जाए। शेष पृष्ठ 11 पर

आपके सवाल हमारे जवाब

प्रश्न– डॉ. साहब मेरा कोलेस्ट्रॉल लेवल हाई रहता है मेरा ऑयली खाना बन्द है। आप बताएँ कि तेल या अन्य Fats हमारे दिल को कैसे प्रभावित करते हैं।

उत्तर– सभी तेलों में शत–प्रतिशत वसा होती है और इसमें ट्राइग्लिसराइड्स की उपस्थिति होती है। हृदय रोग में आम समस्या ब्लॉकेज की होती है या हृदय में रक्त संवाहक नलिकाओं में वसा के जमाव की है। जब हम भोजन में तेल का अधिक सेवन करते हैं तो रक्त में ट्राइग्लिसराइड्स का स्तर बढ़ जाता है और जब यह स्तर १३० Mg प्रतिदिन से अधिक होता है तो ब्लॉकेज बनने लगते हैं, खून गाढ़ा होने लगता है, जिससे दिल की बीमारी बढ़ने लगती है।

प्रश्न– डॉक्टर साहब हृदय रोग के लिए कोलेस्ट्रॉल को ट्राइग्लिसराइड्स की अपेक्षा अधिक जिम्मेदार क्यों माना जाता है?

उत्तर– वर्तमान में कोलेस्ट्रॉल एवं ट्राइग्लिसराइड्स दोनों को हृदय रोग का दोषी माना जाता है। चूँकि कोलेस्ट्रॉल को हृदय रोग के कारण के रूप में आज से पाँच दशक पूर्व ही स्थापित कर दिया गया था, जबकि ट्राइग्लिसराइड्स की भूमिका हाल ही में पता चल पाई है, अतः इस विषय में लोग कम ही जानते हैं।

प्रश्न– डॉक्टर साहब बताएँ कि 'टोंड मिल्क' व 'डबल टोंड मिल्क' क्या है? मुझे डॉक्टर ने डबल टोंड मिल्क लेने की सलाह दी है?

उत्तर– सामान्य दूध में वसा की मात्रा ४ प्रतिशत होती है जब दूध को उबालकर इसकी मलाई हटा दी जाती है तो यह टोंड दूध कहलाता है और इसमें वसा १ प्रतिशत रह जाती है, व्यक्ति को २००ml दूध का सेवन करना चाहिए। **'डबल टोंड दूध'** : डेयरी में दूध से मलाई हटाने की प्रक्रिया मशीन के द्वारा की जाती है। इस तरह टोंड किए गए दूध में वसा की मात्रा ०.५ प्रतिशत रह जाती है। हृदय रोगी इस दूध का सेवन प्रतिदिन २००ml तक कर सकते हैं।

प्रश्न– डॉक्टर साहब मेरी उम्र ४८ वर्ष है और मुझे १ वर्ष पहले शुगर (डायबिटीज) हो गई है। मेरे को कोई ऐसा घरेलू देसी इलाज बताएँ ताकि मुझे एलोपैथी दवा और भविष्य में इन्सुलिन की जरूरत न पड़े।

उत्तर– आप अपना खान–पान में परहेज रखें सदा के लिए। मीठा व ज्यादा कार्बोहाइड्रेट्स युक्त खाद्य (चावल, फ्राई आलू, केला, मैदा) आदि न खाएँ। फलों में केला, आम, चीकू न लें। हर दो–तीन घंटे के अंतराल पर हल्का नाश्ता लें, जैसे–ओट्स, पॉपकार्न, दलिया, पोहा आदि खाएँ, जामुन, अमरूद, सेब, खरबूजा, पपीता खाएँ। बाकी सुबह खाली पेट करेला, गिलोय के पत्ते व तना, नीम के पत्ते, बेल के पत्ते ५–६ सारे मिलाकर मिक्सी में जूस निकालें और पी जाएँ, इससे शुगर लेवल ज्यादा नहीं बढ़ी हुई तो ज्यादा कमजोरी आने या चक्कर आने पर ग्लूकोज के २–४ बिस्किट खाएँ, कभी–कभी शुगर लेवल ज्यादा डाउन भी हो जाता है। अतः रोजाना खाने से पहले व बाद में शुगर टेस्ट कर लिया करें, घर पर ही किया जा सकता है।

हे वीर चलो.....

हे वीर चलो रणधीर चलो कर में लेकर शमशीर चलो
सीमा पर शत्रु सक्रिय है, उसका वक्षस्थल चीर चलो
कर रहा निरंतर वह हमला समझौता भूल गया शिमला।
समझाया उसको कई बार, शैतान नहीं अब तक सम्भला
बन भीमसेन की गदा चलो, अर्जुन का बनकर तीर चलो।
श्री रामचन्द्र ने रावण को जैसे मारा, लंका जारी।
भूखण्ड नष्ट कर दो उसका, फिर भूल जाये वह बटमारी
अब शौर्य तुम्हारा जग देखे, बन कर तुम एक नजीर चलो
श्रृंगार करो हथियारों से, अंगार भरो अपने कर में
अब अग्निबाण की वर्षा हो, लग जाये आग शत्रु घर में।
शत्रु का दो भूगोल बदल, बदलो उसकी तकदीर चलो।
पहले हो शत्रु सूर्य अस्त फिर गंद्दारों से निपटेंगे।
दुश्मन का शीश कटा जिस पल गद्दारों के स्वर बदलेगें।
हो मुल्ला या फिर अब्दुल्ला करना है इन्हें हकीर चलो।
अपना भारत हो फिर अखण्ड हो खण्ड–खण्ड नापाक देश।
अब और प्रतिक्षा करों नही उस पर कर दो हमला विशेष।
बन्धक हो फिर उसकी सेना, बन्दी हों शाह वजीर चलो।
हो बन्द रेल समझौते की बस के पहियें भी थम जायें।
अब खेल नही हो युद्ध करो, उसके हो दूर भरम जायें।
उसने तोड़ी है कई बार तुम तोड़ों सभी लकीर चलों।
कापुरुष हमारे नेतागण बस जायें विदेशों में जाकर।
अब आर पार का युद्ध छिड़े रह जाये धरती थर्रा कर।
भूतल नक्शे से दुश्मन की अब साफ करें तस्वीर चलों।

हितेश कुमार शर्मा

शिव-अपराध-क्षमापन-स्तोत्रम्

आदौ कर्मप्रसंगात् कलयति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितं मा विण्मूत्रामेध्यमध्ये क्वथयति नितरां जाठरो जातवेदाः।
यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथयति नितरां शक्यते केन वक्तुं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।१।।

पहले कर्म प्रसंग से किया हुआ पाप मुझे माता की कुक्षि में ला बिठाता है, फिर उस अपवित्र विष्ठा–मूत्र के बीच जठराग्नि खूब सन्तप्त करती है। वहाँ जो–जो दुःख निरन्तर व्यथित करते रहते हैं, उन्हें कौन कह सकता है? हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

बाल्ये दुःखातिरेको मललुलितवपुः स्तन्यपाने पिपासा
नो शक्तश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनिता जन्तवो मां तुदन्ति।
नानारोगादिदुःखाद्रुदनपरवशः शंकरं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।२।।

बाल्यावस्था में दुःख की अधिकता रहती थी, शरीर मल–मूत्र से लिथड़ा रहता था और निरन्तर स्तनपान की लालसा रहती थी, इन्द्रियों में कोई कार्य करने की सामर्थ्य न थी; शैवी माया से उत्पन्न हुए नाना जन्तु मुझे काटते थे; नाना रोगादि दुःखों के कारण मैं रोता ही रहता था। (उस समय भी) मुझसे शंकर का स्मरण नहीं बना, इसलिए हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविष धरैः पंचभिर्मर्मसन्धौ
दष्टो नष्टो विवेकः सुत धनयुवतिस्वादसौख्ये निषण्णः।
शैवीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।३।।

जब मैं युवा अवस्था में आकर प्रौढ़ हुआ, तो पाँच विषयरूपी सर्पों ने मेरे मर्मस्थानों में डँसा, जिससे मेरा विवेक नष्ट हो गया और मैं धन, स्त्री और सन्तान के सुख भोगने में लग गया। उस समय भी आपके चिन्तन को भूलकर मेरा हृदय बड़े घमण्ड और अभिमान से भर गया। अतः हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

वार्द्धक्ये चेन्द्रियाणां विगतगतिमतिश्चाधिदैवादितापैः
पापै रोगैर्वियोगैरस्त्वनवसितवपुः प्रौढिहीनं च दीनम्।
मिथ्यामोहाभिलाषैर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यानशून्यं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।४।।

वृद्धावस्था में भी, जब इन्द्रियों की गति शिथिल हो गई है, बुद्धि

मन्द पड़ गई है और आधिदैविकादि तापों, पापों, रोगों और वियोगों से शरीर जर्जरित हो गया है, मेरा मन मिथ्या मोह और अभिलाषाओं से दुर्बल और दीन होकर (आप) श्री महादेव जी के चिन्तन से शून्य हो भ्रमित हो रहा है। अतः हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदगहनप्रत्यवाचाकुलाख्यं
श्रौते वार्ता कथं मे द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गे सुसारे
नास्था धर्मे विचारः श्रवणमननयोः किं निदि ध्यासितव्यं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।५।।

पद–पद पर अतिगहन प्रायश्चित्तों से व्याप्त होने के कारण मुझसे तो स्मार्त कर्म भी नहीं हो सकते, फिर जो द्विजकुल के लिए विहित हैं, उन ब्रह्मप्राप्ति के मार्ग स्वरूप श्रौत कर्मों की तो बात ही क्या है? धर्म में आस्था नहीं है और श्रवण–मनन के विषय में विचार ही नहीं होता, निदिध्यासन (ध्यान) भी कैसे किया जाये? अतः हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिविधौ नाहृतं गांगतोयं
पूजार्थं वा कदाचित्बहुतरगहनात्खण्ड बिल्वीदलानि।
नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धपुष्पे त्वदर्थं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।६।।

प्रातःकाल स्नान करके आपका अभिषेक करने के लिए मैं गंगाजल लेकर प्रस्तुत नहीं हुआ, न कभी आपकी पूजा के लिए वन से बिल्व पत्र ही लाया और न आपके लिए तालाब में खिले हुए कमलों की माला तथा गन्ध–पुष्प ही लाकर अर्पण किये। अतः हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

दुग्धैर्मध्वाज्ययुक्तैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लिंग
नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितैः पूजितं न प्रसूनैः।
धूपैः कर्पूरदीपैर्विविधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।७।।

मधु घृत, दधि और शर्करा युक्त दूध (पंचामृत) से मैंने शिव लिंग को स्नान नहीं कराया, चन्दन आदि से अनुलेपन नहीं किया, धतूरे के फूल, धूप, दीप, कपूर तथा नाना रसों से युक्त नैवेद्यों द्वारा पूजन भी नहीं किया। अतः हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

ध्यात्वा चित्ते शिवाख्यं प्रचुरतरधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो
हव्यं ते लक्षसंख्यैर्हुतवहवदने नार्पितं बीजमन्त्रैः।
नो तप्तं गांगतीरे व्रतजपनियमै रुद्रजाप्यैर्न वेदैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।८।।

मैंने चित्त में शिव नाम से आपको स्मरण करके ब्राह्मणों को प्रचुर धन नहीं दिया, न आपके एक लक्ष बीज मन्त्रों द्वारा अग्नि में आहुतियाँ दीं और न व्रत एवं जप के नियम से तथा रुद्र–जप और वेद विधि से गंगा तट पर कोई साधना ही की। अतः हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयमरुत्कुण्डले सूक्ष्ममार्गे
शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटितविभवे ज्योतिरूपे पराख्ये।
लिंगज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शंकरं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।९।।

जिस सूक्ष्म मार्ग प्राप्य सहस्रदल कमल में पहुँचकर प्राण समूह प्रणवनाद में लीन हो जाते हैं और जहाँ जाकर वेद के वाक्यार्थ तथा तात्पर्यभूत पूर्णतया आविर्भूत ज्योति रूप शान्त परम तत्त्व में

शेष पृष्ठ 11 पर

सावन शिवरात्रि पर विशेष

शिवरात्रि पर भोलेनाथ करेंगें कष्टों को दूर

सावन शिवरात्रि बहुत महत्वपूर्ण होती है। माना जाता है कि भगवान भोलेनाथ अपने भक्तों की पुकार बहुत जल्द सुन लेते हैं। इसलिये उनके भक्त अन्य देवी–देवताओं की तुलना में अधिक भी मिलते हैं। भगवान भोलेनाथ का दिन सोमवार माना जाता है और उनकी पूजा का श्रेष्ठ महीना सावन। वैसे तो हर माह कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मासिक शिवरात्रि भी आती है लेकिन सावन महीने में आने वाली शिवरात्रि को फाल्गुन महीने में आने वाली महाशिवरात्रि के समान ही फलदायी माना जाता है।

सावन शिवरात्रि का महत्व : सभी शिवभक्तों को फाल्गुन महीने के बाद सावन महीने का खास तौर पर इंतजार रहता है। दरअसल सावन के पावन सोमवार और उसमें शिवरात्रि के त्यौहार की महिमा ही अलग होती है। इस शिवरात्रि का महत्व इसलिये भी बढ़ जाता है क्योंकि इसमें भगवान शिव का जलाभिषेक करना बहुत पुण्यकारी माना जाता है। सावन के पूरे महीने शिवभक्त बम भोले, हर–हर महादेव के नारे लगाते हुए नजर आते हैं। शिवरात्रि के दिन जलाभिषेक के लिये हरिद्वार, गौमुख से कांवड़ भी लेकर आते हैं। मान्यता है कि श्रावण महीने की शिवरात्रि के दिन जो भी श्रद्धालु सच्चे मन से भगवान शिव की पूजा करते हैं उनके कष्टों का निवारण होता है और मुरादें पूरी हो जाती हैं।

सावन शिवरात्रि पर भोलेनाथ करेंगें कष्ट दूर : अपने भक्तों के संकट तो बाबा भोलेनाथ शिवशंकर दूर करते ही हैं लेकिन सावन के महीने में उनकी विशेष कृपा बरसती है। इस दिन रुद्राभिषेक करने से भक्त के समस्त पापों का विनाश भोले बाबा कर देते हैं। कालसर्प दोष से मुक्ति के लिये जातक ब्रह्म मुहूर्त में शिव मंदिर में जाकर षोडषोपचार से भगवान भोलेनाथ की पूजा करें और धतूरा चढ़ाकर १०८ बार शिवमंत्र का जाप करें। साथ ही चांदी के नाग–नागिन का जोड़ा भी शिवलिंग पर चढायें, भोले बाबा आपको दोष से मुक्त करेंगें। यदि जातक शारीरिक पीड़ा से निवारण चाहते हैं तो इस दिन महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना भी लाभकारी होता है। पंचमुखी रुद्राक्ष की माला लेकर भगवान शिव के मंत्र ऊं नमः शिवाय का जाप करने से तमाम तरह के क्लेश शांत हो जाते हैं।

२०१८ में सावन शिवरात्रि तिथि व मुहूर्त : २०१८ में सावन शिवरात्रि गुरुवार के दिन पड़ रही है अंग्रेजी कलेंडर के अनुसार यह तिथि ६ अगस्त को होगी। निशिथ काल पूजा २४:०५ से २४:४६, पारण का समय ०५:५२ से १५:४४ (१० अगस्त २०१८), चतुर्दशी तिथि आरंभ २२:४५ (६ अगस्त २०१८), चतुर्दशी तिथि समाप्त १६:०७ (१० अगस्त २०१८)

संविधान नही आस्थाओं के व्यापार पर संकट"

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

यह अत्यंत दुःखद है कि जब से देश में भाजपानीत सरकार अस्तित्व में आयी है और श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अनेक प्रकार की विकास परक नीतियों का योजनाबद्ध ढंग से किर्यान्वन किया जा रहा है फिर भी कुछ विदेशी शक्तियों द्वारा नियुक्त उनके भारतीय एजेंटों ने राष्ट्रवादी कहे जाने वाली वर्तमान सरकार को विभिन्न अवसरों पर केवल विरोध करके अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि को धूमिल करने का एक सूत्री कार्य अपना रखा है। धर्म के आधार पर एक दर्दनाक विभाजन झेल चुके हमारे देश में पुनः अल्पसंख्यकों को बिना कारण भयभीत करके व उनको भड़काने के राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय षड़यंत्रों से कब तक हमको अवनति के मार्ग पर ढकेलने का कुप्रयास जारी रहेगा? जबकि पूर्व की भांति अल्पसंख्यक मंत्रालय अल्पसंख्यकों के लिए अनेक अतिरिक्त विशेष योजनाओं द्वारा उनके सशक्तिकरण के प्रति प्रतिबद्ध है। फिर भी ऐसे में भारत की बर्बादी तक जंग जारी रहेगी व भारत के टुकड़े टुकड़े होंगे आदि नारे लगाने वालों के प्रति हमको और अधिक सावधान नही रहना होगा? विशेषतः जब से केंद्र सरकार ने ऐसे देशद्रोही तत्वों को पालने व अनेक देशद्रोही गतिविधियों के लिए धन उपलब्ध कराने वाली विदेशी सहायता प्राप्त स्वयं सेवी संगठनों की विधिवत जांच करके अनेक अनियमितताओं व असंवैधानिक कार्यों में लिप्त पाये जाने पर प्रतिबंधित किया है तब से भारत विरोधी विश्वव्यापी मंडली बौखला गये है। साथ ही इन पर अंकुश लगने से उनके पालतू बुद्धिजीवियों व पत्रकारों और उनसे जुड़े कुछ अन्य लाभान्वित होने वाले प्रभावशाली लोगों के लिए अपनी विलासिता पूर्ण जीवन शैली अपनाने में कठिनाइयां आ रही है। इनकी मुख्य चिंता भारत का संविधान नही बल्कि "आस्थाओं व आत्माओं के व्यापार पर संकट" की समस्या है। भोले–भाले भारतवासियों की फसल का व्यवसाय करके उसको अपने धार्मिक चोले में समेटने की स्वतंत्रता पर अंकुश लगने से ईसाई मिशनरियों में भारी हताशा व्याप्त हो गई है। इसीलिए रोमन कैथोलिक एंटोनिया माइनो के लाडले राहुल गांधी को सत्ता में लाने के लिए अनेक षडयंत्रो को रचने वाले ईसाई तंत्र के आर्क विशप, विशप व पादरी आदि वर्तमान सरकार पर बार बार आरोप लगाये जा रहे है। एक और ईसाई धर्माधिकारी गोवा व दमन के आर्क विशप फादर फिलिप नेरी फेराओ ने भी भारत में न्यायिक व्यवस्था व मानवाधिकारों के प्रति सरकार पर आधारहीन दोष लगा कर अपनी भारत विरोधी दूषित मानसिकता का ही परिचय कराया हैं। इन्होंने विशेषतः अल्पसंख्यक ईसाई समुदाय को भड़काते हुए एक पत्र में लिखा है कि संविधान और लोकतंत्र संकट में है, इसलिये राजनैतिक सक्रियता बढ़ाएं। इससे पूर्व पिछले दिनों कर्नाटक विधान सभा के चुनाव के पहले भी दिल्ली के आर्क विशप अनिल कूटो ने क धार्मिक संगठनों को लिखे पत्र में भड़काने के लिये लिखा था कि देश में विध्वंसकारी राजनीति का वातावरण बना हुआ है , लोकतांत्रिक मूल्यों पर संकट मंडरा रहा है और २०१६ के चुनाव का भी उल्लेख किया था। इसी कड़ी में आपको स्मरण होगा कि पिछले वर्ष २०१७ में गुजरात विधानसभा के चुनावों के समय भी वेटिकन के ध्वजवाहक व गांधी नगर के आर्कविशप मैथ्यू मैक्वान ने भी पत्र लिख कर राष्ट्रवादी शक्तियों को पराजित करने की अपील की थी।

ध्यान रहे इन आर्क विशपों की नियुक्ति वेटिकन के सर्वोच्च रोमन कैथोलिक ईसाई धर्माधिकारी पोप के द्वारा की जाती है और अधिकांशतः तथाकथित स्थानीय धर्माधिकारी उनके गुप्त एजेण्डे को ही आगे बढ़ाने के लिए हमारे देश में नकारात्मक वातावरण बनाते हैं। वर्तमान में हमारे राष्ट्र में लगभग बीस आर्क विशप व एक सौ विशप हैं जो सभी प्रायः वेटिकन के ईसाई धर्म के सर्वोच्च नेता पोप द्वारा व उनके भारतीय प्रतिनिधि/राजदूत जिनको नुना क्लेचर कहते है के द्वारा नियुक्त किये जाते है। इन नियुक्तियों में भारत के ईसाइयों से सामान्यतः निर्णय के लिए कोई सुझाव नही लिया जाता और नही को चर्चा की जाती होगी? निसंदेह ऐसी नियुक्तियों में किसी भी प्रकार से भारतीय ईसाइयों का हस्तक्षेप स्वीकार नही होता होगा। भारत के मूल निवासी व शासन–प्रशासन के सर्वोच्च अधिकारीगण प्रायः सहनशील हैं, उदार हैं, सहिष्णु हैं, विवादों व संघर्षो से बचते हैं, विस्फोट व विनाशकारी कार्यो से दूर रहते हैं और मुख्यतः समझौतावादी होते हैं। हमारे इन गुणों/अवगुणों के कुछ ऐसे ही कारणों से उत्साहित होकर भारत विरोधी मानसिकता वाले प्रभावशाली लोग हमको ही कटघरे में खड़े करने का दुःसाहस करते रहते हैं।जब यह सर्वविदित ही है कि विभिन्न विदेशी षडयंत्र कारी स्थानीय देश द्रोहियों के सहयोग से अनेक प्रकार से बाधक बन कर धार्मिक व सांस्कृतिक आधार पर निरंतर प्रहार करके भारत की एकता और अखण्डता के लिये एक बड़ी चुनौती बनें हुए है। तो फिर ऐसे प्रतिकूल वातावरण में यह सुनिश्चित होना चाहिये कि को भी विदेशी हमारी आंतरिक राष्ट्रीय, धार्मिक व सामाजिक व्यवस्थाओं पर हस्तक्षेप करने की अनाधिकृत चेष्टा न करें। वर्षों पूर्व गुजरात व मध्य प्रदेश आदि में कई बार चर्चो व ननो आदि पर हुए झुठे हमलों की सत्यता उजागर हुई जिसमें उसी धर्म के लोगों के शामिल होने की पुष्टि हुई थी। तब भी ऐसे ही ढोगी चोलाधारी धर्माधिकारियों की किरकिरी हुई थी। इसी प्रकार लगभग दो वर्ष पूर्व दिल्ली आदि कुछ अन्य नगरों में चर्चो व मिशनरी स्कूलों में हुई छुट पुट चोरी व तोड़फोड़ आदि की घटनाओं की जांच करें बिना ही हिन्दुओं की उदारता को ही तथाकथित ईसाई धर्म के ठेकेदारों ने संदेहात्मक बना दिया था। जबकि पिछले कुछ वर्षो से अमरीका में निर्दोष हिन्दुओं को ईसाइयों द्वारा निशाना बना कर उनकी हत्या की जाने तक के समाचार आते हैं और हिन्दुओं का उत्पीड़न व संहार चाहे अफगानिस्तान में हो, पाकिस्तान व बंग्लादेश में हो या फिर कश्मीर सहित भारत व विश्व के किसी भी कोने में हो इन स्वयंभू "भारत भक्तों" की संवेदनायें नहीं जागती। "गुजरात के मोदी" के विरोध में व "कश्मीर के आतंक व अलगाव वादियों" के पक्ष में हड़कंप मचाना इनका मुख्य कार्य बना हुआ है। देश–विदेश में भारत की छवि को धूमिल करने में तीस्ता जावेद, अरुंधति राय, मेघा पाटेकर व निर्मला देशपांडे आदि के स्वयं सेवी संगठन भी इन धर्माधों का बढ़–चढ़ कर साथ निभाते हैं। अवैध विदेशी धन के बल पर भारतीय संस्कृति व हिन्दू धर्म के विरुद्ध नकारात्मक वातावरण बनाने वालों को आज अपने स्वार्थों के लिए जूझना पड़ रहा हैं। यह कैसी मानसिकता है जो इन धर्माधिकारियों और तथाकथित भारत भक्तों के झूठे व मनगठन्त प्रचारों द्वारा करोडों भारतवासियों को अपमानित होने को विवश करती है?

प्रायः यह स्पष्ट है कि मुसलमानों के समान ही ईसाइयों के वैश्विक इतिहास को पलट कर पढ़ने व समझने से पता चलता है कि भारत के साथ साथ पुरी दुनिया मे ईसाइयों ने भी अपना साम्राज्य बढ़ाने के लिए अपने धर्मानुयायियों की संख्या बल को बढाने के लिए किस किस प्रकार के षडयंत्र रचे थे और अभी भी रचते है। इसके लिए इनके शिक्षा के केंद्र, चिकित्सा सुविधाएं संस्थान व लोभ–लालच आदि के द्वारा धर्मांतरण करवाना प्रमुख है। प्रायःपादरियों द्वारा हिन्दू देवी–देवताओं के प्रति अभ्रद प्रचार भी उनके षडयंत्रों का एक प्रमुख भाग है। वास्तव में इनके विस्तार का मुख्य आधार ही धर्मान्तरण है इसीलिये यह प्रक्रिया भारत सहित विश्व के अनेक भागों में जारी है।

ब्रिटिश शासन में ईसाई मिशनरियों द्वारा बडे पैमाने पर हिंदुओं को आदिवासी व जनजाति बता कर धर्मान्तरित करके इसाई बनाया गया था वहीं योजनायें कही गुप्त रूप से तो कहीं स्पष्ट रूप में अभी भी चलायी जा रही है। इसके लिए मुस्लिम देशों के समान ईसाई देशों से भी प्रति वर्ष लगभग १० से १५ हज़ार करोड़ रुपया विभिन्न संगठनों के माध्यम से आता रहा है। मोदी सरकार द्वारा ऐसी सैकड़ो–हज़ारों स्वयं सेवी संस्थाओं पर प्रतिबंध लगाये गये हैं। वैसे भी आस्थाओं व आत्माओं का व्यापार नहीं किया जाना चाहिये। कुछ प्रदेशों छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, गुजरात व हिमाचल प्रदेश में इसको रोकने का प्रावधान किया गया है परंतु कितना प्रभावशाली है अभी स्पष्ट कहा नही जा सकता। लेकिन राष्ट्रीय हित में धर्मांतरण पर पूर्ण प्रतिबंध लगे तो अनेक समस्याओं का निदान स्वतः ही हो जायेगा।

यह कहना अनुचित नहीं होगा कि इन समस्त नकारात्मक सोच वालों का केवल एक सूत्री एजेंडा होता है कि भारत को अस्थिर करने के लिये राष्ट्रवादी शक्तियों पर येन केन प्रकारेण आक्रामक बने रहो और अपने विदेशी आकाओं और प्रायोजकों को प्रसन्न रखो ताकि उनको आस्थाओं व आत्माओं के व्यापार की छूट मिली रहें। इसीलिए इन चर्च के धर्माधिकारियों के लिये संविधान नही "आस्थाओं के व्यापार पर संकट" मुख्य चिंता का विषय बना हुआ है।

हिन्दी के संवैधानिक अधिकार पर अब भी अंग्रेजी का आधिपत्य क्यों?

✍ सर्वेश चन्द्र द्विवेदी

(पिछले अंक का शेष)

(२) संविधन की आठवीं सूची में हिन्दी के अतिरिक्त भारत की १४ प्रमुख भाषाओं का उल्लेख किया गया। देश की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओं के पूर्ण विकास हेतु सामूहिक उपाय किये जाने चाहिए। अतः सभा संकल्प करती है कि हिन्दी के साथ–साथ इन भाषाओं के समन्वित विकास के हेतु भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जायेगा और उसे क्रियान्वित किया जायेगा ताकि वे शीघ्र सम्बद्ध हो और आधुनिक ज्ञान के संचार का माध्यम प्रभावी बने। देश के विद्यालयों में छात्रों को किन–किन भाषाओं की शिक्षा दी जाये, इस बारे में समय–समय पर विचार हुआ और देश की विभन्न परिस्थितियों और आवश्यकताओं को देखते हुए शिक्षा के क्षेत्र में त्रिभाषा सूत्र अपनाने का प्रयास किया गया।

(३) एकता की भावना के संवर्द्धन तथा देश के विभिन्न भाषाओं में जनता में संचार की सुविधा हेतु यह आवश्यक है कि भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श से तैयार हुए त्रिभाषा सूत्र को सभी राज्यों में पूर्णतः कार्यान्वित करने के लिए प्रभावी उपाय किये जाने चाहिए। यह सभा संकल्प करती है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा दक्षिण भारत की भाषाओं में से किसी एक को तरजीह देते हुए और अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषाओं एवं अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी के अध्ययन के लिए उस सूत्र के अनुसार प्रबन्ध किया जाना चाहिए। **(यह सूत्र अब तक प्रभावी नहीं हो सका। क्योकि नियत में अंग्रेजी हटाना नहीं था, हिन्दी को प्रथम राजभाषा स्वीकार भी करना नहीं चाहते थे। इतना ही नहीं संस्कृत भाषा भी नहीं चाहते थे।)**

(४) केन्द्र सरकार की नौकरियों में प्रवेश के लिए परीक्षाओं का माध्यम कौन–सी भाषा अथवा भाषाएँ रहें, यह लम्बे समय से चर्चा और विवाद का विषय रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाएँ अंग्रेजी का स्थान लेती जा रही और काफी हद तक ले चुकी, तो **केन्द्र सरकार की नौकरियों मेंप्रवेश के लिए अंग्रेजी का पहले जैसा स्थान बना रहना उचित नहीं ठहराया जा सकता,** किन्तु यह भी देखना आवश्यक है कि हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों के लोगों को किसी प्रकार की अनुचित हानि न हो इन सब बातों को ध्यान में रखकर यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि संघ की लोक सेवाओं **के विषय में देश के विभिन्न भाषाओं के लोगों के न्यायोचित दावों और हितो का पूर्ण परित्राण किया जाये।** यह सभा संकल्प करती है कि उन विशेष सेवाओं अथवा पदों को छोड़कर जिसके लिए किसी सेवा अथवा पद के कर्तव्यो के सन्तोषजनक निष्पादन के हेतु केवल अंग्रेजी अथवा हिन्दी अथवा (दोनों जैसी स्थिति हो) का उच्च स्तर का ज्ञान आवश्यक समझा जाये। संघ–सेवाओं अथवा पदों के लिए भर्ती करने हेतु उम्मीदवारो के चयन के समय हिन्दी अथवा अंग्रेजी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्यतः अपेक्षित होगा। **इसमें भी हिन्दी को प्रथम भाषा नहीं स्वीकारा है।**

(ख)परीक्षाओं की भावी योजना–प्रक्रिया सम्बन्धी पहलुओं एवं समय के विषय में संघ लोकसेवा आयोग के विचार जानने के पश्चात अखिल भारतीय एवं उच्च स्तरीय केन्द्रीय सेवाओं सम्बन्धी परीक्षाओं में आठवीं सूची की सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पित माध्यम के रूप में रखने की अनुमति होगी।

२३ दिसम्बर, १९६७ को राज्सभा में गृहमंत्री ने संकल्प का महत्त्व बतलाया, कहा और हिन्दी को विकसित करने का संकल्प किया। सभी भारतीय भाषाओं के विकास के प्रया का संकल्प त्रिभाषा फार्मूला की स्वीकारोक्ति, संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं

का माध्यम क्षेत्रीय भाषाओं को स्वीकार किया तथा केन्द्रीय सेवाओं में नियुक्ति के समय हिन्दी या अंग्रेजी को आवश्यक ठहराया गया। हिन्दी अंग्रेजी अनिवार्यता पर कहा कि अंग्रेजी जानने वाले को हिन्दी तथा हिन्दी जानने वाले को हिन्दी अंग्रेजी सीखनी होगी। हिन्दी को प्रथम राजभाषा तथा अंग्रेजी को हटाने के लिए वर्ष १९६७ में उत्तर भारत में विद्यार्थियों ने आन्दोलन भी किया। डा. राममनोहर लोहिया आन्दोलन के समर्थक थे। लोहियावादी समाजवादी नेता मुलयायम सिंह यादव ने उ.प्र. में हिन्दी को प्राथमिकता दी।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि उस समय की सरकार अंग्रेजी को हटाकर हिन्दी को देश की राजभाषा नहीं बनाना चाहती थी। संसद भी मौन समर्थक रही इसी वजह से राजभाषा अधिनियम १९६३ का संशोधन १९६७ में किया गया। अधिनियम की धरा ३ के अनुसार अंग्रेजी का प्रयोग २६.६.१९६५ के बाद भी जारी रखने का कानून बना। प्रधानमंत्री के कथन पर ही राजभाषा संशोधन १९६७ में (३) (ज) में व्यवस्था की गयी कि सरकारी कामकाज के लिए अंग्रेजी का प्रयोग तब तक जारी रहेगा जब तक इस व्यवस्था को खत्म करने के लिए हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाने वाले सभी राज्यों के विधानमंडल आवश्यक संकल्प पारित न करें और उसके बाद ऐसा करने के लिए संसद का प्रत्येक सदन भी इस आशय का संकल्प पारित कर दे। यह संकल्प यह प्रदर्शित **करता है कि हिन्दी को राजभाषा होने से कैसे रोका जाये। जबकि संविधान हिन्दी को राजभाषा घोषित कर चुका है।**

भारतीय भाषाओं और शिखा माध्यम पर २६ नवम्बर, १९८३ को दिल्ली में एक सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसका उद्घाटन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जीने किया। सम्मेलन (गोष्ठी) में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव था कि विश्वविद्यालय स्तर तक सभी विषयों की शिक्षा हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के जरिये दी जा सकती है। प्रस्ताव में सभी लोकसेवा आयोगों, बैंकों, जीवन बीमा निगमों तथा अन्य व्यापक स्तर पर भर्ती करने वाली एजेन्सियों से अनुरोध भी किया गया कि वह अपनी परीक्षाएँ भारतीय भाषाओं में लें। इसमें जाने–माने शिक्षा शास्त्रियों, कुलपतियों, ग्रन्थ अकादमियों, राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डलों के निर्देशकों ने भाग लिया था।

भारत की संस्कृति के सम्पूर्ण वाड्मय हमारे शास्त्र संस्कृत भाषा में हैं। वेद केवल धार्मिक ग्रन्थ ही नहीं विज्ञान व दर्शन का भी ज्ञान हैं संस्कृत भाषा संविधन की आठवीं अनुसूची में क्रमांक ११ पर है लेकिन राज्यों ने इसे स्वीकार कर इसके विस्तार पर प्रभावी कार्य नहीं किया। जबकि आज नासा में संस्कृत भाषा को महत्व दिया जा रहा एवं वैदिक ज्ञान को समझने का प्रयास हो रहा। कम्प्यूटर के लिए संस्कृत विश्व की सबसे समृद्ध भाषा मानी जा रही। त्रिभाषा सूत्र में संस्कृत भाषा मानी जा रही। त्रिभाषा सूत्र में संस्कृत भाषा को स्थान नहीं दिया गया। देश में हिन्दी के साथ संस्कृत की शिक्षा दी जाती थी, उसे भी समाप्त किया जा रहा है। कुछ संगठन भी आवश्यक कार्य कर रहें। सभी भारतीय भाषाएँ सांस्कृतिक रूप में समृद्धता की थाती है।

गांधी जी ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का आहान किया तथा 'करो या मरो' का नारा दिया। भारत सरकार ६ अगस्त को भारत 'छोड़ो आन्दोलन' की पछतरवीं वर्षगाँठ मना रहा। संसद में चर्चा हो रही जबकि गान्धी जी ने यह भी कहा था कि व्यक्ति बुरे नहीं, व्यक्ति की बुराइयों से घृणा करो। अथर्ज्ञत् अंग्रेज बुरे थे अथवा उनकी अंग्रेजियत उसका माध्यम उनकी भाषा अंग्रेजी। **देश ने ५ वर्ष में अंग्रेजों को तो बाहर कियाः लेकिन अंग्रेजियत व अंग्रेजी को स्वीकार किया, जिसने हमें राजसता के द्वारा परितन्त्र किया। अंग्रेजी भारत को कब छोड़ेगी,** संविधान ने भारतीयता का रास्ता बताया, लेकिन अब तक (काले अंग्रेज) अंग्रेजियत वालों ने देश को भाषायी गुलाम बना रखा है। ५२ वर्षों में अंग्रेजियत से स्वतन्त्रता पाना है। भारतीयता, राष्ट्रयता को स्थापित करना है। सर्वोच्च न्यायालय में अंग्रेजी भाषा से स्वतन्त्रता प्राप्त करना है। इण्डिया के स्थान पर भारत स्थापित करना है। तो इसका संकल्प भी लेना होगा।

स्पष्ट है कि राजभाषा के लिए देश तैयार है, लेकिन अंग्रेजी मानसिकता के गुलाम व्यक्ति, संस्थाएँ

शेष पृष्ठ 11 पर

प्रफुल्लचन्द्र चाकी के बलिदान का उद्देश्य

✍ डॉ० कुलदीपचन्द अग्निहोत्री

बिहार में एक छोटा–सा स्थान है मोकामा। आज तो वह तालुका स्थान माना जाने लगा है; परन्तु सौ साल पहले मोकामा को कोई नहीं जानता था। वैसे भी उसमें जानने लायक तो कुछ खास है भी नहीं। यदि प्रयास करके गाँव के लोग अपने गाँव को कोई खास पहचान देना ही चाहें; तो वे कह सकते हैं कि मोकामा में उन दिनों भी रेलवे लाइन थी। जब भारत के अधिकांश लोगों ने रेल की बात तो दूर, तारकोल की सड़क के भी दर्शन नहीं किये थे; लेकिन एक दिन मोकामा भारत के सभी अखबारों में सुर्खियों में आ गया। मोकामा के आसपास के गाँव के लोग तो उस गाँव की चर्चा कर ही रहे थे। दिल्ली से लेकर कोलकाता तक सरकारी हलकों में एक ही प्रश्न पूछा जा रहा था कि यह मोकामा है कहाँ? क्योंकि क्रान्तिकारी गतिविधियों के लिए भी मोकामा का नाम नहीं लिया जाता था। वहाँ से कोई आन्दोलन भी नहीं उठा था और कोई ऐसा युगपुरुष भी नहीं हुआ था, जिसका नाम लेकर मोकामा के लोग अपने गाँव का इतिहास आते–जाते लोगों को बताने लगें; पर १९०८ की २ मई को मोकामा के रेलवे स्टेशन पर जिन लोगों ने एक किशोर को पुलिस के साथ लुका–छिपी का खेल खेलते हुए देखा था, उनकी आँखें अभी तक विस्फारित थीं और मुँह खुला हुआ। यह तो उन्हें बहुत बाद में पता चला कि जो किशोर अकेला ही ब्रिटिश पुलिस को चुनौती दे रहा है, उसका नाम प्रफुल्लचन्द्र चाकी था। चाकी के कर्म को जान लेने से पहले चाकी के जन्म को जान लेना जरूरी है।

प्रफुल्ल चाकी का जन्म उस समय के पूर्वी बंगाल (अब बांग्लादेश) के बोगरा जिले के बिहर गाँव में १० दिसम्बर, १८८८ को हुआ था। उनके पिता राजनारायण बोगरा के नवाब के यहाँ नौकरी करते थे; लेकिन चाकी के जन्म के कुछ अर्सा बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। माँ स्वर्णमयी ने बच्चे की शिक्षा–दीक्षा का प्रबन्ध किया। गाँव के प्राथमिक विद्यालय में उन्होंने प्रवेश लिया; परन्तु प्राथमिक शिक्षा के बाद १९०४ में रंगपुर के जिला स्कूल में दाखिल हो गये। इस स्कूल में उनका दाखिला ही उनकी जीवनधारा को बदलने वाला सिद्ध हुआ और यह बदलाव इतनी तीव्र–गति से आया कि जब तक माँ स्वर्णमयी कुछ समझ पातीं, तब तक चाकी तारा बनकर नभमण्डल में जा चुके थे। रंगपुर में उन दिनों 'बान्धव समिति' सक्रिय थी, जिसमें युवा शारीरिक व्यायाम तो करते ही, साथ ही सामाजिक, सांस्कृतिक विषयों पर चिन्तन भी होता था। उन्हीं दिनों बंग–भंग आन्दोलन फैला, तो रंगपुर जिला स्कूल के छात्रों ने प्रदर्शन प्रारम्भ किये। फिर चाकी को 'बान्धव समिति' के भी बन्धु थे। सबसे उग्र स्वर उनका ही था। प्रधानाचार्य ने उन्हें स्कूल से बाहर कर दिया; परन्तु वे राष्ट्रीयता को लेकर उत्तेजक वातावरण के दिन थे। सरकारी स्कूलों से चाकी जैसे अनेक छात्र निष्कासित किये जा रहे थे। इसलिए कुछ राष्ट्रवादियों ने मिलकर रंगपुर में वैकल्पिक राष्ट्रीय स्कूल की व्यवस्था कर ली थी। अब चाकी इसी स्कूल के विद्यार्थी हुए और इसी स्कूल में उनका सम्पर्क उन दिनों के क्रान्तिकारियों से हुआ। जितेन्द्र नारायण राय, अविनाश चक्रवर्ती, इशान चन्द्र चक्रवर्ती और न जाने कौन–कौन, जिनकी शक्लें चाकी के मन–मस्तिष्क में घूमती रहतीं।

उन दिनों अपनी क्रूरता, दम्भ और अत्याचारों के लिए पूर्वी बंगाल और असम का लेफ्टिनेण्ट गवर्नर बम्मफाइल्दी फुलर बहुत कुख्यात था और उन्हीं दिनों प्रसिद्ध क्रान्तिकारी, जिन्होंने जुगान्तर क्रान्तिकारी दल की स्थापना की थी, श्री वीरेन्द्र कुमार घोष रंगपुर आये। प्रफुल्लचन्द्र चाकी का घोष से परिचय हुआ और घोष दा प्रफुल्ल को अपने साथ ही कोलकाता ले गये। रंगपुर पीछे छूट गया, रंगपुर का स्कूल पीछे छूट गया और साथ ही छूट गये ममतामयी माँ स्वर्णमयी के सपने। चाकी कोलकाता के गंगा तट पर पहुँच गये थे। कोलकाता का पुकुर बगीचा उन दिनों एक प्रकार के क्रान्तिकारियों का केन्द्र ही था। साधारण जन तो इस बगीचे को विप्लवी बाग ही कहता था। चाकी की इसी स्थान पर रहने की व्यवस्था की गई। वीरेन घोष बम्मफाइल्दी फुलर को मारने की योजना में लगे हुए थे। फुलर सरकारी प्रवास में दार्जिलिंग आने वाला था। घोष दा ने नियत समय और स्थान पर फुलर को यमद्वार पर पहुँचाने का जिम्मा चाकी को दे दिया; लेकिन फुलर का सौभाग्य और चाकी का दुर्भाग्य। अन्तिम समय में फुलर के दार्जिलिंग–प्रवास का कार्यक्रम ही रद्द हो गया।

परन्तु 'जुगान्तर दल' की सूची में एक नहीं अनेक नाम थे। दूसरा नाम था, कोलकाता के प्रेसिडेन्सी मजिस्ट्रेट डग्लस किंग्सफोर्ड का। किंग्सफोर्ड राष्ट्रवादी क्रान्तिकारियों को यातनामयी लम्बी सजाएँ देने के लिए बदनाम था। वह जज के आसन पर बैठकर न्याय नहीं करता था; बल्कि ब्रिटेन के साम्राज्यवादी हितों की रक्षा करता था। अपने इन्हीं अत्याचारी कारनामों के कारण किंग्सफोर्ड क्रान्तिकारियों की आँखों में खटकता था। सुशील कुमार सेन के किस्से ने जलती आग पर तेल का काम किया। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी सुशील दा को किंग्सफोर्ड ने नंगी पीठ पर बेंत की सजा दी। सुशील दा की नंगी पीठ पर सैकड़ों बेंत पड़े; परन्तु उस नरपुंगव के मुँह से एक बार भी आह न निकली। सुशील दा ने प्राण त्याग दिये। उसी वक्त चाकी ने मन ही मन फैसला किया मैं किंग्सफोर्ड को यमलोक पहुँचाऊँगा। किंग्सफोर्ड को ठिकाने लगाने का कार्य प्रफुल्ल चन्द्र चाकी और खुदीराम बोस को सौंपा गया; परन्तु ये दोनों क्रान्तिकारी अपनी योजना में सफल हो पाते, इससे पहले ही डग्लस किंग्सफोर्ड का तबादला मुजफ्फरपुर हो गया। बोस और चाकी दोनों ही उसका पीछा करते हुए मुजफ्फरपुर पहुँच गये और उसकी गतिविधियों पर पैनी नजर रखने लगे। दोनों को सही मौके और उपयुक्त स्थान की तलाश थी। डग्लस किंग्सफोर्ड की दिनचर्या अब दोनों को लगभग कण्ठस्थ हो चुकी थी। मुजफ्फरपुर के सभी अंग्रेज अधिकारी यूरोपियन क्लब के सदस्य थे। शाम को सभी वहाँ इकट्ठे होते। भारत और भारतीयों को गाली देते और शराब के नशे में धुत हो जाते। डग्लस किंग्सफोर्ड भी रोज इस क्लब में आता था। ३० अप्रैल, १९०८ का दिन था। चाकी और बोस दोनों यूरोपियन क्लब के गेट के बाहर डग्लस किंग्सफोर्ड की बग्घी की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब एक बग्घी बाहर आई, तो चाकी ने उस पर बम फेंक दिया। खुदीराम बोस ने रिवाल्वर से दनादन गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं। एकदम हड़कम्प मच गया। इस भगदड़ में चाकी और बोस दोनों ही भाग निकले; परन्तु यह बग्घी किंग्सफोर्ड की नहीं थी। इसमें एक महिला श्रीमती केनेडी और उसकी बेटी मारी गयीं। शराब के नशे में धुत किंग्सफोर्ड उस दिन क्लब में ही पड़ा हुआ था। दो पुलिस वालों फैजुद्दीन और तसीलदार खाँ ने दूर तक पीछा करते हुए चाकी और बोस को पकड़ने का प्रयास किया; परन्तु इन क्रान्तिकारियों के तो मानों पैरों में पंख उग आये हों, रात के अंधकार में मुजफ्फरपुर और समस्तीपुर के बीच दोनों दौड़ते रहे। पैर लहूलुहान हो गये। शरीर में दम नहीं रहा। चलना मुश्किल हो रहा था। भोर हुई, तो रास्ते किनारे की एक दुकान पर चने–चबेने के लिए बैठे। किसी ने ऊँची आवाज में अखबार की सुर्खी पढ़ी। डग्लस किंग्सफोर्ड के धोखे में दो महिलाएँ मारी गयीं। चाकी चौंके और बदहवास उनके मुँह से निकला–डग्लस बच गया! चाकी और बोस का हुलिया तो पहले ही उन्हें संदेहास्पद बनाये हुए था। डगलस को लेकर उनके चौंकने पर वहाँ बैठे पुलिस के दो सिपाही फतेहसिंह और शिवप्रसाद मिश्र भी चौंक पड़े। दोनों ने एक साथ ही एक दूसरे की ओर देखा और चाकी गोलियाँ चलाते हुए भाग लिये। सिपाहियों को अब कोई शक नहीं रहा कि ये दोनों युवक डगलस पर हुए आक्रमण से जुड़े हुए हैं। खुदीराम बोस पकड़ में आ गये थे; लेकिन चाकी भागते हुए समस्तीपुर ही पहुँच गये। वहाँ के एक सज्जन ने चाकी को टिकट लेकर ट्रेन में बैठा दिया। देश का दुर्भाग्य कि इसी ट्रेन में सिंहभूम का पुलिस इन्स्पेक्टर नन्दलाल बनर्जी सफर कर रहा था। बनर्जी की पैनी पुलिसिया दृष्टि और चाकी का थका हुआ चेहरा। किंग्सफोर्ड पर हुए आक्रमण की खबर तो जंगल में आग की तरह फैल ही चुकी थी। चाकी इस डिब्बे से उठकर दूसरे डिब्बे में चले गये। बनर्जी का शक विश्वास में बदल गया। उन्होंने रास्ते से ही मुजफ्फरपुर के मजिस्ट्रेट को फोन कर अपने सन्देह की सूचना दे दी। चाकी जैसे ही मोकामा स्टेशन पहुँचे, पुलिस ने उन्हें घेर लिया। दोनों ओर से गोलियाँ चलने लगीं। पुलिस महारानी के साम्राज्य के लिए लड़ रही थी और चाकी भारतमाता की मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहे थे। इसलिए चाकी प्राण हथेली पर लेकर लड़ रहे थे; लेकिन वेतनभोगी पुलिस अपने प्राणों की रक्षा करते हुए आगे बढ़ रही थी। पुलिस को ललकारते हुए चाकी प्लेटफार्म नं. ३ से १ तक आ पहुँचे; परन्तु इस बार उनके पिस्तौल ने धोखा दे दिया। चाकी ने चारों ओर देखा, बचने का कोई रास्ता नहीं था। वह चिल्लाये–कम से कम मैं ब्रिटिश पुलिस के हाथों से तो नहीं मरूँगा, और यह कहकर उन्होंने 'भारतमाता की जय' कहा और अपनी ब्राउनिंग पिस्तौल निकाल ली। पिस्तौल में केवल दो गोलियाँ थीं। उन्होंने एक गोली अपनी छाती में और दूसरी कनपटी पर ही दाग दी। चाकी मोकामा के रेलवे स्टेशन पर गिर पड़े। लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई। भारत माँ का सपूत उसे बन्धनमुक्त करने के लिए उसी के चरणों में अर्पित हो गया था; लेकिन किसी को नहीं पता था, यह युवक कौन है? न पुलिस को और न ही इस युवक के शौर्य से अभिभूत हो रही जनता को। पुलिस ने युवक का सिर काटकर धड़ से अलग कर दिया और इस सिर को जेल में बन्द खुदीराम बोस के पास ले गये। बोस

शेष पृष्ठ 10 पर

आवश्यकता है संविधान सम्मत भारतीय अर्थनीति पर पुनर्विचार की

✍ सर्वेश चन्द्र द्विवेदी

भारत मूलतः कृषि आधारित अर्थव्यवस्था का देश है। वैश्विक परिदृश्य के अनुरूप उसे औद्योगिक देश बनाने का प्रयास आजादी के पूर्व से ही किया जा रहा हैं। देश के सबसे बड़े राष्ट्रनिष्ठ श्रमिक संगठन भारतीय मजदूर संघ ने दि. १७ सितम्बर, २०१७ को दिल्ली के रामलीला मैदान में लाखों की संख्या में एकत्र होकर सरकार की श्रम व मजदूर विरोधी आर्थिक नीतियों के विरुद्ध प्रदर्शन कर अपना विरोध प्रकट किया है। इससे पूर्व भी मजदूरों की समस्याओं को लेकर कई प्रदर्शन किये गये। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की एन.डी.ए. सरकार के समय भी लालक़िले पर भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक स्व. दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी के नेतृत्व में विश्व बाजारवाद की नीति को देश के हितों के विरुद्ध मानकर बड़ी संख्या में मजदूरों ने विरोध प्रकट किया था, नारा दिया था डब्ल्यू.टी.ओ. छोड़ो। किसानों के अन्य संगठनों ने भी अपना विरोध प्रदर्शन किया।

आज भी किसान व मजदूर देश में आर्थिक सृजन की सबसे बड़ी शक्ति है। अपनी आर्थिक क्षमता के आधार पर उपभोक्ता भी हैं। कहा गया है अर्थ का अभाव व अर्थ का प्रभाव दोनों ही अपराध (भ्रष्टाचार व शोषण) के कारण हैं, जिससे समाज में अशान्ति उत्पन्न होती है। भारतीय मजदूर संघ का ध्येय राष्ट्र का औद्योगीकरण, उद्योगों का श्रमिकीकरण, श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण, देशहित में काम, काम के पूरे दाम हैं। भारतीय किसान संघ का नारा है 'अन्न के भण्डार भरेंगे' दोनों का हेतु राष्ट्र व देश का सर्वोच्च हित है। सरकार भी देश व राष्ट्र हित में ही विकास कार्य कर रही है, फिर भी आर्थिक असंतुलन के कारण किसान व मजदूर कष्ट में हैं। देश की अर्थनीति लोक व समाज के अनुरूप नहीं है। इस पर विवेचन आवश्यक है। इसके लिए देश की पूर्व, वैदिक अर्थनीति, ब्रिटिश काल तथा स्वतंत्रता के बाद की अर्थनीति पर विचार करना समयानुकूल होगा।

वैदिक संस्कृति में चार पुरुषार्थों का महत्व है। इनकी पूर्ति के लिए अथर्ववेद का 'वार्ता' संज्ञक उपवेद है। कृषि, उद्यम, दस्तकारी, सेवा विपणन व न्याय, दण्डनीति आदि उपक्रम अर्थनीति के सन्दर्भ में आते हैं। इनमें प्रकृति प्रदत्त व मानव निर्मित अर्थ का सृजन, निवेश, संरक्षण व वितरण, उपभोग धर्म के अनुरूप अर्थ है, जिसमें व्यक्ति, कुटुम्ब, समाज देश व राष्ट्र के लिए कर्तव्यों का निर्धारण है। कर्म के अन्तर्गत यज्ञ, दान, सेवा रूपी तप समाज उपयोगी तथा सीमित भोग की व्यवस्था है।

ईशावास्यमिदं सर्वयत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

अर्थात् जगत में जो स्थावर जंगम संसार है, वह सब ईश्वर का है त्यागपूर्वक भोग करना दूसरे के धन की इच्छा न करना अर्थात् अर्थ के मालिक नहीं ट्रस्टी हैं।

पुराणों के अनुसार भारत कर्मभूमि शेष विश्व भोग भूमि है।

भारतवर्ष सोने की चिड़िया कहलाता था, मुगलों और अंग्रेजी शासन तक विदेशी लुटेरों ने लूट की। अंग्रेज व्यापारी बनकर आये और राज्य करने लगे। देश के मालिक बन गये। लार्ड मैकाले ने ब्रिटिश संसद में २ फरवरी, १८३५ को सम्बोधित करते हुए कहा था कि भारत में इतना धन, उच्च नैतिक मूल्य तथा उच्च कलेवर के कुशल व्यक्ति हैं। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं, जो चोर व भिखारी हो। हम इस देश को तब तक नहीं जीत सकते, जब तक कि हम उनकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत रूपी रीढ़ की हड्डी न तोड़ दें। इसलिए हमें उनकी प्राचीन शिक्षा पद्धति व संस्कृति को समाप्त कर अपनी शिक्षा व संस्कृति प्रतिस्थापित करनी होगी। यदि भारतीय जन यह सोचने समझने लगेंगे कि

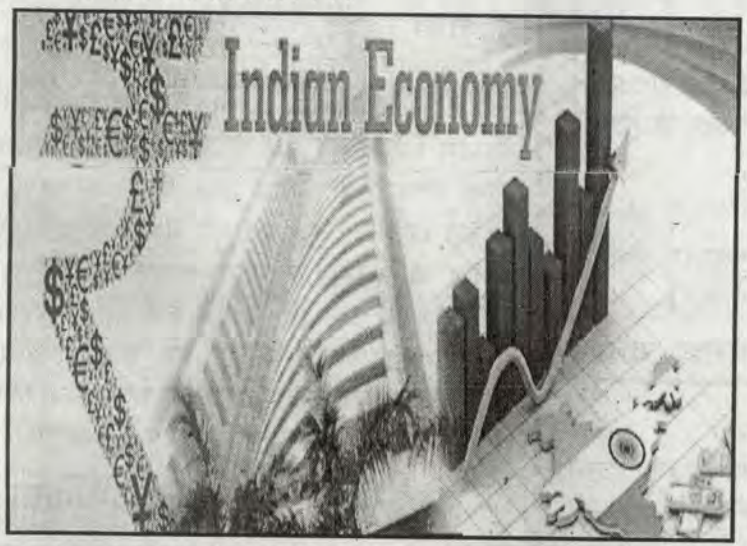

जो भी वस्तु विदेशी और विशेष रूप से अंग्रेजी है, वह उनकी अपनी वस्तुओं से बेहतर और बड़ी है, तो वे अपने स्वाभिमान और स्व संस्कृति को खो देंगे। वे वैसे ही बन जायेंगे जैसा हम चाहते हैं।

संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) के गवर्नर मिटकाव ने वर्ष १८५४ में शिक्षा, चिकित्सा, न्याय, सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, कृषि उद्योग, कर आदि जीवनशैली सम्बन्धी सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन कराया। सुधार के नाम पर शनैः–शनैः परिवर्तन करना शुरू किया। १८८७, १९०६ तथा १९३५ तक देश की सम्पूर्ण व्यवस्था बदल चुकी थी। इसे पश्चिम की आर्थिक नीति (पूँजीवाद) कहा जा सकता है। विश्व के अनेक देश भारत सहित इनके अधीन हो गये। लेकिन इनका विरोध भी होता रहा। प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध भी लड़े गये। भारत देश के जागरूक राष्ट्रप्रेमी जनों द्वारा अंग्रेज सरकार का विरोध शुरू हुआ। स्वतंत्रता की माँग होने लगी। संगठन के रूप में कांग्रेस का एक आन्दोलन मंचव बना। अंग्रेजों तथा उनकी नीति का विरोध समाज अपने तरीके से संगठित होकर करने लगा।

डॉ. हेडगेवार ने वर्ष १९२५ में विजयदशमी के दिन नागपुर में 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' जो आज विश्व का सबसे बड़ा संगठन बन चुका है, की स्थापना की। 'राष्ट्रधर्म' मासिक के सम्पादक स्व. भानुप्रताप शुक्ल जी द्वारा सम्पादित पुस्तक 'संकेत रेखा' दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी के मार्गदर्शन में 'भारतीय मजदूर संघ' द्वारा प्रकाशित हुई, जिसमें डॉ. हेडगेवार जी की प्रासंगिकता का वर्णन है। वर्ष १९२० में नागपुर में कांग्रेस का अधिवेशन था जिसकी स्वागत समिति के सक्रिय सदस्य डॉ. हेडगेवार जी के आग्रह पर एक प्रस्ताव नियामक समिति के पास भेजा था। प्रस्ताव में कहा गया था कि नागपुर कांग्रेस अधिवेशन निम्न द्विविध ध्येय निःसंदिग्ध शब्दों में घोषित करना चाहिए।

१. भारत को स्वतंत्र करते हुए प्रजातंत्र की स्थापना करना।

२. विश्व के सभी देशों को पूँजीवाद के चंगुल से मुक्त कराना।

भारतीय मजदूर संघ के पूँजीवाद का विरोध का स्रोत इस प्रस्ताव के दूसरे हिस्से में निहित है। डॉक्टर जी का दूसरा प्रस्ताव देश व विश्व की आर्थिक नीति के लिए था, जो आज भी प्रासंगिक है। भारत सहित पूरा विश्व पूँजीवाद के प्रभाव में है। भारत देश १९४७ में राजनीतिक रूप से स्वतंत्र हो गया।

भारत का अपना संविधान २६ नवम्बर, १९४९ को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हुए २६ जनवरी, १९५० को लागू हुआ। उद्देशिका में सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतांत्रिक गणराज्य, बयालिसवें संशोधन में समाजवादी, पंथनिरपेक्ष को जोड़ा गया। जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता, व्यक्ति की गरिमा सुनिश्चित करने वाली बन्धुता में 'राष्ट्र की एकता अखंडता' को जोड़ा गया। संविधान में नागरिकों के मूल अधिकार प्रमुखतः समता का अधिकार, विधि में समानता, धर्म, मूलवंश, जाति लिंग या जन्म स्थान के आधार पर विभेद का प्रतिरोध, लोक नियोजन में अवसर की समता, स्वातन्त्र्य अधिकार प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण, शोषण के विरुद्ध अधिकार, धर्म स्वातन्त्र्य, संस्कृति और शिक्षा सम्बन्धी अधिकार, सम्पत्ति अर्जन का अधिकार, जिसे बयालिसवें संशोधन में निरसित किया गया।

संवैधानिक उपचारों का अधिकार तथा अनु. ५१ए में नागरिकों के कर्तव्य भी निश्चित किये गये हैं। राज्य की कल्पना लोकहितकारी राज्य के रूप में की गई है। इसकी पूर्ति के लिए राज्य को नीति–निर्देशक तत्त्व दिये गये।

राज्य के कार्य : देश की अर्थनीति के लिए अनु. ३८ में राज्य लोक कल्याण की अभिवृद्धि के लिए सामाजिक व्यवस्था बनायेगा। (१) राज्य ऐसी सामाजिक व्यवस्था करे जिसमें सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक न्याय राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को सुलभ हो; भरसक प्रभावी रूप में इसकी स्थापना और संरक्षण करके लोक कल्याण की अभिवृद्धि का प्रयास करेगा। **४२वें संशोधन में जोड़ा गया कि (२) राज्य विशिष्टतः आय की असमानताओं को कम करने का प्रयास करेगा और न केवल व्यष्टियों के बीच बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले और विभिन्न व्यवसायों में लगे हुए लोगों के समूहों के बीच भी प्रतिष्ठा सुविधाओं और अवसरों की असमानता समाप्त करने का प्रयास करेगा।**

अनुच्छेद ३९ में राज्य द्वारा अनुसरणीय कुछ नीति तत्त्व–राज्य अपनी नीति का विशिष्टतया इस प्रकार संचालन करेगा कि सुनिश्चित रूप से (क) पुरुष और स्त्री सभी नागरिकों को समान रूप से जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार हो। (ख) समुदाय के भौतिक संसाधनों का स्वामित्व और नियंत्रण इस प्रकार बँटा हो, जिससे सामूहिक हित का सर्वोत्तम रूप से साधन हो। (ग) आर्थिक व्यवस्था इस प्रकार चले जिससे धन और उत्पादन साधनों का सर्वसाधारण के लिए अहितकारी संकेन्द्रण न हो। (घ) पुरुषों और स्त्रियों दोनों का समान कार्य के लिए समान वेतन हो। (ङ) पुरुष और स्त्री कर्मकारों के स्वास्थ्य और शक्ति का तथा बालकों की सुकुमार अवस्था का दुरुपयोग न हो और आर्थिक आवश्यकता से विवश होकर नागरिकों को ऐसे रोजगारों में न जाना पड़े जो आयु और शक्ति के अनुकूल न हो। (च) बालकों को स्वतंत्र और गरिमामय वातावरण में स्वस्थ विकास के अवसर और सुविधाएँ दी जायें और बालकों तथा अल्पवय व्यक्तियों की शोषण से तथा नैतिक और आर्थिक परित्याग से रक्षा की जाये।

(४०) ग्राम पंचायतों का संगठन : राज्य ग्राम पंचायतों का संगठन करने के लिए कदम उठायेगा और उनको ऐसी शक्तियाँ और प्राधिकार प्रदान करेगा, जो उन्हें स्वायत्त शासन की इकाइयों के रूप में कार्य करने योग्य बनाने के लिए आवश्यक हों।

अनुच्छेद ४१ कुछ दशाओं में काम, शिक्षा और लोक सहायता पाने का अधिकार राज्य अपनी आर्थिक सामर्थ्य और विकास की सीमाओं के भीतर, काम पाने के, शिक्षा पाने के और बेकारी, बुढ़ापा, बीमारी और निःशक्तता तथा अन्य अनर्ह अभाव की दशा में लोक सहायता पाने के अधिकार को प्राप्त करने का प्रभावी उपबन्ध करेगा।

इन तत्त्वों के अतिरिक्त अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़े वर्ग के उन्नयन के लिए आरक्षण की व्यवस्था भी सामाजिक न्याय की दृष्टि से कुछ निश्चित समय के लिए की गई।

आर्थिक सुधार : प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने देश की आर्थिक नीति रूस से प्रभावित होकर मिश्रित (नियो) समाजवादी अर्थव्यवस्था लागू की जिसका मूल आधार कारपोरेट व राज्य पूँजीवाद था। पूँजीवाद की दो प्रचलित धाराएँ हैं। एक राज्य पूँजीवाद जिसमें सम्पूर्ण पूँजी राज्य में निहित हो, जिसे साम्यवाद कहा गया, दूसरा पूँजीवाद कारपोरेट जगत व व्यक्तिगत पूँजी। इसका आधार लाभ व श्रम उत्पादन से पूँजी अर्जित करना। राज्य द्वारा पूँजी के लिए समाज (उपभोक्ताओं) व संस्थाओं से टैक्स प्राप्त करना। इन दोनों प्रकार से पूँजी का विस्तार किया गया। देश में निजी व सार्वजनिक क्षेत्र में बड़े–बड़े उद्योग

शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

विश्व जनसंख्या दिवस दिनांक 11 जुलाई 2018

❖ खंडित भारत की जनसंख्या प्रधानमंत्री कभी 125 करोड़ कहते हैं तो कभी 132 करोड़। यह 7 करोड़ का अन्तर क्यों?

❖ 1947 में अखण्डित भारत, जनसंख्या की दृष्टि से प्रथम स्थान पर था जबकि खण्डित भारत अब दूसरे स्थान पर हैं।

❖ खण्डित भारत में हिन्दू 88 प्रतिशत और मुस्लिम, ईसाई 12 प्रतिशत थे।

❖ कांग्रेस/भाजपा की तुष्टीकरण नीति, मुस्लिम, ईसाईयों को अखिल भारतीय स्तर पर अल्पसंख्यक घोषित करके, उनके लिए करोड़ों–अरबों रूपयों की विभिन्न योजनाएं चलाकर, उन्हें संगठित और आक्रामक बना दिया है।

❖ अब हिन्दू का प्रतिशत 80 और मुस्लिम, ईसाई का प्रतिशत 20 हो गया है। –कांग्रेस ने 20 प्रतिशत अल्पसंख्यक आबादी के आधार पर देश के 700 जिलों में 90 जिलें अल्पसंख्यक घोषित किए थे।

❖ "तुष्टीकरण के बिना अल्पसंख्यक सशक्तिकरण" का नारा लगाकर 4 सालों में मोदी की भाजपा सरकार ने, हिन्दुओं को मूर्ख बनाकर, उनका खून चूसकर, 25 प्रतिशत आबादी के आधार पर अल्पसंख्सक जिलों की संख्या 196 कर दी थी जिसे अब और बढ़ाकर 308 कर दी है।

❖ सभी दल आर्य समाज, पतंजलि योगपीठ, संतों के अखाड़े आदि हिन्दुओं के घटते हुए प्रतिशत पर प्रायः मौन रहते हैं।

❖ हिन्दू महासभा, विश्व हिन्दू परिषद, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा आदि जैसे संगठन हिन्दुओं के घटते प्रतिशत को रोकने के लिए कार्य करते हैं और सरकार के मांग भी करते–रहते हैं।

हमारी मांगे हैं कि अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए बनी सभी योजनाएं तुरन्त बन्द की जाएं–उनकी नसबन्दी अनिवार्य की जाए और हिन्दू कल्याण मंत्रालय खोला जाए जो देश–विदेश के हिन्दुओं के हितार्थ विभिन्न प्रकार के कार्य करे।

सावरकर वाद प्रसार सभा

शेष पृष्ठ 8 का

प्रफुल्लचन्द्र चाकी के बलिदान.....

ने चाकी के सिर को प्रणाम किया, तो पुलिस की शिनाख्त पूरी हो गई कि आत्मबलिदान करने वाला युवक प्रफुल्ल चन्द्र चाकी था, जिसने दो दिन पहले डग्लस किंग्सफोर्ड को मारने की कोशिश की थी। जब यह खबर माँ स्वर्णमयी के पास पहुँची, तो उन्होंने अंगुलियों पर गिनती की। उसके बेटे की उम्र के बीस साल पूरे हो चुके थे। बहुत साल पहले किसी ज्योतिषी ने कहा था–तुम्हारा बेटा अल्पजीवी होगा।

अंग्रेज सरकार की पुलिस तो चाकी को केवल कुछ घण्टों के लिए ही नहीं पहचान पाई थी। बाद में उसने अच्छी तरह पहचान लिया था कि यह चाकी है, जो मुजफ्फरपुर बमकांड का पुरोहित भी है और यजमान भी। इस बमकांड ने बंगाल की क्रान्तिकारी धारा को नई गति और नई ऊर्जा दी थी; परन्तु लगता है भारत सरकार, जो अंग्रेजों के चले जाने के बाद अपने आपको असली भारत सरकार कहती है, सौ साल बाद भी चाकी को पहचान नहीं पायी। मोकामा रेलवे स्टेशन पर गाड़ी रुकती है, तो कहीं से नहीं लगता कि इस स्टेशन पर भारतमाता को एक ऐसा पुष्प स्वप्रेरणा से अर्पित हुआ था, जिसने शहीदों के नभमण्डल में ध्रुव का स्थान प्राप्त कर लिया है। चाकी मोकामा के रहने वाले तो नहीं थे; लेकिन उन्होंने अपने जीवन की आहुति भारतमाता के चरणों में मोकामा की धरती पर ही दी थी। इसलिए मोकामा के लोग आज भी अपने आपको चाकी के ऋणी महसूस करते हैं। चाकी ने मोकामा को उसकी पहचान दे दी। चाकी ने मोकामा को अमर कर दिया; लेकिन मोकामा का एक स्वप्न पूरा न हो सका, मोकामा रेलवे स्टेशन के उस स्थल पर जहाँ चाकी शहीद हुए थे, चाकी की मूर्ति नहीं लग पाई। अंग्रेज सरकार तो वहाँ मूर्ति लगवा नहीं सकती थी; क्योंकि उनके लिए चाकी साम्राज्य के शत्रु थे। आतंकवादी थे। वह महारानी विक्टोरिया की सल्तनत को चुनौती दे रहे थे।

परन्तु भारत सरकार चाकी की मूर्ति लगवाने के लिए क्यों तैयार नहीं है? उसे चाकी से क्यों डर लग रहा है। वह शहीद स्थल पर चाकी की मूर्ति से क्यों रुबरु नहीं होना चाहती है। भारत सरकार के अन्दर छिपा वह कौन–सा भाव है, जो सौ साल बाद भी चाकी से डर रहा है। मोकामा के लोग निराश हैं। चाकी ने इतिहास में मोकामा का सिर ऊँचा कर दिया; लेकिन भारत सरकार उसको शर्मसार कर रही है। ऐसा नहीं कि मोकामा के लोग स्वयं चाकी की मूर्ति नहीं लगा सकते। वे उनकी मूर्ति बनवा सकते हैं। उसके लिए धन व्यय कर सकते हैं; लेकिन उसे वे उस स्थल पर नहीं स्थापित कर सकते, जहाँ चाकी गोली मारकर शहीद हुए थे; क्योंकि वह स्थल रेलवे स्टेशन पर है और रेलवे स्टेशन भारत सरकार के कब्जे में है। भारत सरकार अपने कब्जे वाले स्थान पर चाकी की मूर्ति लगवाने की इजाजत नहीं दे रही है। एक बूढ़ा जिसके शरीर में झुर्रियाँ पड़ गई हैं, आँखों से दिखाई नहीं देता, मुँह पोपला हो गया है, कानों में साँय–साँय की आवाज आती रहती है, अस्पष्ट सी डरी–सहमी वाणी में पूछता है–क्या मोकामा रेलवे स्टेशन अभी भी अंग्रेजों के कब्जे में है? और फिर स्वयं ही उत्तर देता है–कहीं भारत सरकार भी तो उन्हीं गोरों के कब्जे में तो नहीं है, जो चाकी से उसी प्रकार डर रही है, जिस प्रकार गोरे डरते थे?

मोकामा के लोग बूढ़े के इन प्रश्नों का भला क्या उत्तर दें? एक नौजवान कहता है–बूढ़ा सठिया गया है। दूसरा पहले की ओर देखकर क्रोध से कहता है 'मुझे लगता है स्वतन्त्र भारत की सरकार सठिया गई है।' बीच में एक पागल हँसता है। सचमुच सरकार को साठ साल तो पूरे हो ही गये हैं। चाकी बनने के लिए भी कुछ सीमा तक पागलपन की जरूरत होती है। बुद्धिमान लोग तो विवाह–शादी कर अपने घर–गृहस्थी की सार संभाल करते हैं। इसलिए सभी लोग चाकी से डरते हैं। सरकार भी और सरकार के दलाल भी। भारत सरकार अपनी घर–गृहस्थी संभाल रही है, चाकी को कौन जाने? मोकामा के लोगों ने सरकार को चिट्ठी लिखी कि चाकी पर एक डाक टिकट जारी किया जाये, तो सरकारी नौकरशाहों ने जवाब दिया–इसका कोई कायदा कानून होता है। या तो मरने के पच्चीस साल बाद, या फिर पचास साल बाद या फिर पचहत्तर साल बाद या फिर पूरे सौ साल बाद। आप गँवई लोग बीच–बीच में सरकार बहादुर को चिट्ठियाँ लिखकर उसका समय नष्ट कर रहे हो। मोकामा के लोग फिर चुप हो गये। आखिर सरकारी बात ठहरी। जवाब देना मुश्किल। फिर वही पागल चिल्लाया। धीरूभाई अंबानी को मरे हुए तो कुछ भी समय नहीं बीता था कि झट से डाक टिकट आ गया और चाकी के मामले में वही नौकरशाही अड़ंगे।

उत्तर प्रदेश के अल्पसंख्यक विद्यालयों में भी पद भर

राज्य सरकार ने अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के 37 राजकीय इंटर कॉलेजों में प्रधानाचार्य, प्रवक्ता, सहायक अध्यापक सहित विभिन्न श्रेणी के 851 पद सृजित किए हैं। केन्द्र सरकार के मल्टी सेक्टोरल डवलपमेंट प्रोग्राम के तहत अल्पसंख्यक कल्याण विभाग की ओर से 37 राजकीय इंटर कॉलेजों का निर्माण किया गया है। इनका संचालन माध्यमिक शिक्षा विभाग के जरिए किया जाएगा। एक राजकीय इंटर कॉलेज के लिए, कुल 23 पद सृजित किए गए हैं। इनमें प्रधानाचार्य का एक पद, प्रवक्ता के 9 पद, सहायक अध्यापक के 7 पद, वरिष्ठ एवं कनिष्ठ सहायक के एक–एक पद तथा चतुर्थ श्रेणी कम लैब बीयरर के 4 पद शामिल है। प्रधानाचार्य के कुल 37 पद, प्रवक्ता के 333 पद, सहायक अध्यापक के 259 पद, वरिष्ठ सहायक के 37 और कनिष्ठ सहायक के 37 पद सृजित किए गए हैं। इसके अलावा चतुर्थ श्रेणी के 148 पद सेवा प्रदाता के जरिए भरे जाएंगे।

प्रतिक्रिया

१. एक और भाजपा की योगी सरकार सब का साथ, सब का विकास का नारा लगा रही है दूसरी ओर अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के माध्यम से अल्पसंख्यकों का घोर तुष्टीकरण करके, कांग्रेस के राह पर चलते हुए बहुसंख्यकों की उपेक्षा व अवहेलना कर रही है।

२. अब बहुसंख्यक भाजपा को वोट देकर पछता रहा है।

३. जागृति का परिणात है कि उत्तर प्रदेश के तीनों लोकसभा के उपचुनावों और एक विधान सभा के उपचुनाव में भाजपा के प्रत्याशी हारे हैं।

४. हमारी मांग है कि अल्पसंख्यक कल्याण विभाग भंग कर दिया जाए।

५. ऐसे विभागों के बने रहने से अल्पसंख्यकों में अलगाववादी विचार धारा मजबूत होगी। **इन्द्रदेव गुलाटी, वीर सावरकर पुस्तकालय एवं वाचनालय, बुलन्दशहर**

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये

द्विवार्षिक.....300/- रुपये

आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 1 का

भारतीय मूल के अमेरिकी उत्तम...

काम किया है। उन्होंने कल ड्रग एनफोर्समेंट एजेंसी के कार्यवाहक निदेशक का पदभार संभाला। अटोर्नी जनरल जेफ सेशंस ने उनकी नियुक्ति की घोषणा करते हुए कहा, हर नौवें मिनट में अत्यधिक मात्रा में मादक पदार्थ के सेवन से एक अमेरिकी नागरिक मर रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमलोग अपने इतिहास में सबसे घातक मादक पदार्थ महामारी के दौर से गुजर रहे हैं। सेशंस ने कहा कि इस संकट के खिलाफ लड़ाई में ड्रग एनफोर्समेंट एडमिनिस्ट्रेशन का कार्य अहम हो जाता है और वह एवं राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प इसे एक मजबूत नेतृत्व देने के लिये प्रतिबद्ध हैं, जिसका वह हकदार है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने उत्तम ढिल्लों को बधाई दी है।

शेष पृष्ठ 1 का

शेर-ए-कश्मीर यूनिवर्सिटी में राष्ट्रगान.....

था। इससे पहले उनके खिलाफ डोजियर तैयार किया गया था। जिन १२ अफसरों को बर्खास्त किया गया, उनके खिलाफ पुलिस ने तहकीकात शुरू की थी। पुलिस ने इन अफसरों को लेकर एक अहम जांच रिपोर्ट तैयार की थी। इन अफसरों पर पुलिस रिपोर्ट सामने आने के बाद राज्य के मुख्य सचिव के आदेश पर इन अधिकारियों को बर्खास्त कर दिया गया। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने जममू–कश्मीर के राज्यपाल से मांग की है कि राष्ट्रगान का अपमान करने वालों पर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा दर्ज कर कड़ी कार्रवाही की जायें।

शेष पृष्ठ 4 का

डायबिटीज में करें प्राकृतिक.....

गुर्दे की सूजन (नैफ्राइटिस) चिकित्सा क्रम

❖ लघु हरीतकी चूर्ण १ ग्राम, त्र्यूषणादि लौह २ रत्ती (१ पुड़िया), दिन में ऐसी तीन पुड़िया प्रतिदिन, निम्न क्वाथ से दें–त्रिफला २० ग्राम, गोखरू छोटा १० ग्राम, पाषाणभेद ६ ग्राम, पुनर्नवा ६ ग्राम, सोंठ पानी १ लीटर में उबालकर ३००ml रहे, इसमें से १००ml के हिसाब से प्रातः, दोपहर, शाम को दिया जाता है। रोगी का पेट साफ रहने लगेगा।

❖ आरोग्यादि अवलेह १–२ तोला तक लें भोजनोपरान्त।

प्रातः चिकित्सा क्रम : कान्तलौह भस्म, नवायस मण्डूर, शोथादि लौह, पत्थर तोड़ भस्म १–१ रत्ती, पुनर्नवा मण्डूर, सर्वतोभद्र वटी, आरोग्यवर्धिनी वटी १–१ गोली, श्वेतपर्पटी ४ रत्ती, रोहितकारिष्ट आधा कप, समस्त दवा पुनर्नवादिक्वाथ या गौमूत्र से एक कप में बराबर पानी मिलाकर साथ दें।

भोजनोत्तर (भोजन से पहले) : पुनर्नवासव, अभ्यारिष्ट, कुमार्यासव (आधा कप मिलाकर) अग्निमुखचूर्ण ३ ग्राम, पानी एक कप के साथ लें।

सायं : पुनर्नवादि गुग्गुल, गोक्षुरादिगुग्गल, चन्द्रप्रभावटी १–१ गोली, गोक्षुरादि क्वाथ से लें।

रात्रि को : स्वर्णबसन्तमालती रस, स्वर्णबसन्तकुसुमाकर रस आधी–आधी रत्ती शिलाजीत सत्व १ रत्ती, च्यवनप्राशावलेह से लें।

पूर्ण चिकित्सा चिकित्सक के निरीक्षण में ३–४ माह तक चलती है और सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं। यह अनुभूत प्रयोग है।

शेष पृष्ठ 9 का

आवश्यकता है संविधान सम्मत.....

लगाये गये। लालबहादुर शास्त्री जी ने कृषि व सेना को प्रोत्साहित किया। जय जवान, जय किसान का नारा दिया। देश की सुरक्षा व अन्न के लिए आत्मनिर्भरता को महत्त्व दिया। श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने बैंकों व उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के नाम पर सरकार ने निजी बैंक तथा कुछ उद्योग जैसें कपड़ा सीमेंट शुगर आदि का अधिग्रहण किया। राजाओं के प्रिवी पर्स समाप्त किये। ४२वें संशोधन में लोकहितकारी अर्थनीति को स्थापित करने, सम्पत्ति के अर्जन के अधिकार को निरसित किया। जिसे देश का बड़ा आर्थिक सुधार कहा गया।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सकें, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 5 का

शिव-अपराध-क्षमापन.....

लीन हो जाता है, उस कमल में स्थित होकर मैं सर्वान्तर्यामी कल्याणकारी आपका स्मरण नहीं करता हूँ। अतः हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

नग्नो निःसंगशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्तमोहान्धकारो
नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित्।
उन्मन्यावस्थया त्वां विगतकलिमलं शंकरं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।१०।।

नग्न, निःसंग, शुद्ध और त्रिगुणातीत होकर, मोहान्धकार का ध्वंस कर तथा नासिकाग्र में दृष्टि स्थिर कर मैंने (आप) शंकर के गुणों को जानकर कभी आपका दर्शन नहीं किया और न उन्मनी–अवस्था से कलिमल रहित आप कल्याण स्वरूप का स्मरण ही करता हूँ। अतः हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गंगाधरे शंकरे
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रलौक्यसारे हरे
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमखिलामन्यैस्तु किं कर्मभिः।।११।।

चन्द्रकला से जिनका ललाट–प्रदेश भासित हो रहा है, जो कन्दर्पदर्पहारी हैं, गंगाधर हैं, कल्याण स्वरूप हैं, सर्पों से जिनके कण्ठ और कर्ण भूषित हैं, नेत्रों से अग्नि प्रकट हो रही है, हस्तिचर्म की जिनकी कन्था है तथा जो त्रिलोकी के सार हैं, उन शिव में मोक्ष के लिए अपनी सम्पूर्ण चित्तवृत्तियों को लगा दें; और कर्मों से क्या प्रयोजन है?

किं वानेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं
किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम्।
ज्ञात्वैतत्क्षणभंगुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः
स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वतीवल्लभम्।।१२।।

इस धन, घोड़े, हाथी और राज्यादि की प्राप्ति से क्या? पुत्र, स्त्री, मित्र, पशु, देह और घर से क्या? इनको क्षणभंगुर जानकर रे मन! दूर ही से त्याग दे और आत्मानुभव के लिए गुरुवचनानुसार पार्वतीवल्लभ श्री शंकर का भजन कर।

आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनं
प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद्भक्षकः।
लक्ष्मीस्तोयतरंगभंगचपला विद्युच्चलं जीवितं
तस्मान्मां शरणागतं शरणद! त्वं रक्ष रक्षाधुना।।१३।।

देखते–देखते आयु नित्य नष्ट हो रही है, यौवन प्रतिदिन क्षीण हो रहा है; बीते हुए दिन फिर लौटकर नहीं आते; काल सम्पूर्ण जगत को खा रहा है। लक्ष्मी जल की तरंगमाला के समान चपल है; जीवन बिजली के समान चंचल है; अतः मुझ शरणागत की हे शरणागतवत्सल शंकर! अब रक्षा करो! रक्षा करो!

करचरणकृत वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।१४।।

हाथों से, पैरों से, वाणी से, शरीर से, कर्म से, कर्णों से, नेत्रों से अथवा मन से भी जो अपराध किये हों, वे विहित हों अथवा अविहित, उन सबको हे करुणासागर महादेव शम्भो! क्षमा कीजिये। आपकी जय हो, जय हो।

शेष पृष्ठ 7 का

हिन्दी के संवैधानिक अधिकार.....

अपने देश की राजभाषा को स्वीकारना ही नहीं चाहते। भारत के संविधान को लागू होने के १५ वर्ष के अन्दर दो आयोगों के गठन की बात भी थी। केवल एक ही आयोग गठित हुआ। संविधान के ५१ (क) में संविधान को जानना व मानना चाहिए, की व्यवस्था है लेकिन अंग्रेजी से प्रभावित संसद् ५२ वर्ष में भी हिन्दी राजभाषा स्थापित नहीं कर सकी। जबकि भारत की अन्य राजभाषाएँ तो हिन्दी की सहयोगी हैं मात्र अंग्रेजी ही इसकी रुकावट है। अंग्रेजी किसी राज्य की मातृभाषा भी नहीं, तो केन्द्र की राजभाषा हो इसका कोई औचित्य नहीं। संविधान में भाषा के लिए संकल्प की कोई व्यवस्था नहीं तो केन्द्र व राज्यों को संकल्प लेने की भी आवश्यकता क्यों बनायी, इसका कोई वैधानिक औचित्य भी नहीं? सबसे बड़ा कारपोरेट जगत है, जो हिन्दी नहीं अपना रहा जिसका सरकारों व संसद् में दखल है। कहना उचित ही होगा कि संविधान को सरकार, संसद् व कारपोरेट नहीं मान रहे हैं। अतः देश की जनता को समझना होगा कि सरकार व सांसद ही संविधान के दोषी हैं मा.राष्ट्रपति महोदय ने भी संविधान की रक्षा करने की चेष्ठा नहीं की। देश व राष्ट्र के लिए करण चतुष्टय का महत्व है। व्यक्ति के अन्तःकरण, वाह्यकरण, व्याकरण, उपकरण जिस प्रकार विकसित होंगे, राष्ट्र उतना ही विकसित व समृद्धशाली होगा। अतः भाषा अभिव्यक्ति के साथ ही संस्कृति का भी पोषण करती है। अतः वर्तमान म.म. राष्ट्रपति महोदय अपने अधिकार का प्रयोग कर हिन्दी राजभाषा घोषित करें, दोनों सदनों को बुलाकर संविधान विरुद्ध राजभाषा अधिनियम १९६३ व संशोधन १९६७ को निरस्त कराये, जिससे देश की जनता गुलामी की भाषा से निजात पा सके। ब्रिटिश की इण्डिया, भारत हो सके।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

पर्यावरण-संरक्षण की सम्यक दृष्टि

पृथ्वी पर जीवन लगभग ३० खरब वर्षों से विद्यमान है। प्राणी तथा पर्यावरण एक दूसरे के सम्पूरक है। प्रत्येक प्राणी पर्यावरण के अनुरूप ही अपना जीवन–चक्र पूरा करता है। पर्यावरण प्रकृतिक का अनुशासन/संतुलन है, जिसके भंग होने से प्रदूषण उत्पन्न होता है। प्रदूषण से तात्पर्य वातावरण के भौतिक, रासायनिक व जैविक अवस्था में इस प्रकार का परिवर्तन हो जाता है, जिससे मानव पशु–पक्षी, वनस्पति तथा सौन्दर्य प्रतीकों को क्षति पहुँचती है। पृथ्वी पर हमारे चारों ओर आकाश, वायु, जल, पर्वत, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े व अन्य जीव जन्तु है। परन्तु हम में से बहुत कम लोग इस बात पर ध्यान दे पाते है कि प्रकृति की इन सभी चीजों और जीवों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। प्रकृति–चक्र को ठीक से बनाये रखने के लिये इन सबका बचाव भी उतना ही जरूरी है जितना कि खुद हमारा प्रकृति से आतंरिक लगाव रखने वालें चेतन लोग पर्यावरण के महत्व के प्रति सजग रहने के कारण इसकी उपयोगिता को सहज स्वीकार करते है, लेकिन प्रकृति के अचेतन व्यक्ति पर्यावरण जैसे महत्वपूर्ण विषय के प्रति आज भी उदासीन है। जिसके कारण पर्यावरण की समस्या अत्यन्त भयानक स्थिति में पहुंच चुकी है। पर्यावरणीय सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था समय रहते ही करने से विश्व में मानवता खुशहाल रह सकती है। हमारी सभ्यता एवं संस्कृति विश्व में सर्वश्रेष्ठ रही है परन्तु पाश्वात्य सभ्यता का आँख मीच कर अनुसरण करने से हमने न केवल अपनी सभ्यता को ठेस पहुंचाई है बलिक अपने पर्यावरण को भारी क्षति पहुंचाई है। पहले सभी बड़े समारोहों में भोजन पत्तों तथा दोनों में कराया जाता था और पानी या रायता मिट्टी के गिलासों में दिया जाता था परन्तु आज 'यूज एण्ड थ्रो' (इस्तेमाल करो और फेंक दो) के सिद्धान्त पर पाली पैक प्लास्टिक की प्लेट कटोरी व गिलास प्रयोग में लाये जा रहे हैं तथा जल प्लास्टिक की बोलतों में बन्द होकर मिल रहा है जिसे शुद्धता का प्रतीक माना जा रहा है चाहे उसमें निर्धारित गुणवत्ता विद्यमान हो या न हो। पॉलीथीन व प्लास्टिक उत्पाद का कचरा हमारे पर्यावरण को भारी पैमाने पर हानि पहुंचा रहा है।

कभी पवित्र माना जाने वाला गंगा–जल आज पूरी तरह प्रदूषित है। सरकार ने गंगा एक्शन प्लान बना कर गंगा को प्रदूषण मुक्त करने का बीड़ा उठाया था जिसमें कुछ काम हुआ परन्तु फिर भी गंगा–प्रदूषण मुक्त नहीं हो पाई क्योंकि न तो गंगा तट पर रहने वाले लोगों में पर्यावरण चेतना जगाई गई और न ही आस पास के उद्योगों के अवशिष्ट पदार्थो को गंगा में जाने से पूरी तरह रोका गया।

हमारे देश में तस्करों के गिरोह बड़ी निर्दयता से वन्य जीवों को बेतहाशा मारते जा रहे हैं और इन जीवों के अंग–प्रत्यन्गों को विदेशों में भेज रहे है, जिससे कुछ वन्य जीव लुप्त हो चुके है। तथा बहुत से लुप्त होने की कगार पर है। इतना बड़ा अनर्थ वन सुरक्षा शुल्क से जुड़े अधिकारियों तथा कर्मचारियों के सहयोग के बिना सम्भव नहीं है। आज के वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में विभिन्न औद्योगिक संस्थाओं के सतत निर्माण, आटोमोबाइल्स का बढ़ता प्रयोग एवं औद्योगिक संस्थाओं से अवशिष्ट पदार्थो को फेकना, निरन्तर बढ़ती जन–संख, निरन्तर खेतों में छिड़की जाने वाली कीटनाशक दवाओं आदि से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता जारहा है जिसके फलस्वरूप पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है।

अब आवश्यकता है जन–जन को समझाने की कि 'पर्यावरण' है क्या? इसे क्यों और कैसे संरक्षित रखा जाये देश के प्रत्येक हृदय में पर्यावरण–चेतना जागृत करने के लिए क्षेत्रीय स्तर पर कार्य करना होगा। वैज्ञानिक उन्माद लिये पाश्वात्य सभ्यता का अनुसंरण करने वाले लोग भी आज अपने हर आवश्यक कार्य में अपने धर्म में प्रचलित मान्यताओं का निर्वाह करते हैं। कारण चाहे कुछ भी हो! क्यों न इसका प्रयोग पर्यावरण–चेतना फैलाने में किया जाये जब हर व्यक्ति चेता जायेगा तो उसे पेड़ काटते देख पीड़ा होगी, चिमनियों से उठता धुंआ, कारखानों से निकलती धूल व वाहनों के धुएं को देख दम घुटने का आभास होने लगेगा। उसे लगेगा कि तालाब, नदी अथवा नालों में बहता अपशिष्ट उसके पीने के पानी में जा रहा है तो वास्तव में न तो कोई स्वयं भूमि, जल, एवं वायु को प्रदूषित करने का प्रयास करेगा न किसी और को ऐसा दुस्साहस करने देगा। समग्र दृष्टि से देखा जाये तो आज पर्यावरण संरक्षण में ही समाज की भलाई है। इसे तत्काल अमल में लाना चाहिए।

कबिरा खड़ा बजार में

दरबारी प्रवृत्ति से कब उबरेंगे हमारे नेता जी

लोकतंत्र में राजतंत्र की घुसपैठ किस तरह से करवाई जा सकती है, इसकी मिसाल जनता दरबार जैसे आयोजनों में देखी जा सकती है। दरबार शब्द किसी नजरिए से लोकतांत्रिक शब्द नहीं है, इससे राजशाही की बू आती है। शपथग्रहण समारोह को भी अक्सर ताजपोशी जैसे विशेषण दे दिए जाते हैं। ताज या मुकुट पहनना या दरबार सजा कर उसमें फरियादियों को खड़ा करना तो सामंती, राजतंत्र के युग में होता था। ७० साल पहले आजाद हुए भारत में तो लोकतंत्र कायम है और यही कायम रहना चाहिए, तभी भारत बच पाएगा। लेकिन अफसोस इस बात का है कि हमारे अधिकतर नेताओं के मिजाज सत्ता में आते ही राजा की तरह हो जाते हैं। राजशाही की यह मानसिकता और सत्ता के रौब की एक बानगी पिछले दिनों उत्तराखंड में देखने को मिली। जहां मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने जनता दरबार लगाया था। एक ओर मुख्यमंत्री अपने कारिन्दो के साथ थे और दूसरी ओर कुछ दूरी पर फरियादी जनता। मुख्यमंत्री के सिर पर सोने का मुकुट और अगल–बगल पंखा झुलाते सेवक नहीं खड़े थे, बाकी सारा नजारा दरबार जैसा ही था। यहां एक शिक्षिका ने अपने तबादले की मांग मुख्यमंत्री के सामने रखी। ५७ बरस की उत्तरा बहुगुणा उत्तरकाशी के नौगांव क्षेत्र के प्राइमरी स्कूल में प्रिंसिपल हैं, लगभग २५ वर्ष से वे यहां पदस्थ हैं। वे कई वर्षो से देहरादून तबादले की गुहार लगाती रही हैं, क्योंकि उनके बच्चे देहरादून में हैं। २०१५ में उनके पति की भी मौत हो गई। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने २०१७ के अपने एक आदेश में कहा है कि विशेष परिस्थितियों में शिक्षिकाओं का तबादला उनके पति के गृहजिले में किया जा सकता है। मानवीय आधार भी यही है कि पति की मौत के बाद पत्नी को उसके बच्चों के पास रहकर काम करने की अनुमति दी जाए। लेकिन भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री रावत को शायद सत्ता के अहंकार में किसी विधवा कर्मचारी की पीड़ा दिखाई नहीं दी। उन्हें दिखाई दी केवल उत्तरा बहुगुणा की बेअदबी। बस इस पर वे इतना भड़क उठे कि न केवल उत्तरा के निलंबन का आदेश दिया, बल्कि हिरासत में भी लेने को कह दिया। हालांकि मामले का वीडियो वायरल हुआ तो भाजपा सरकार को समझ में आया कि यह अहंकार उल्टा पड़ सकता है, तो शाम तक उत्तरा की रिहाई भी हो गई। अब शिक्षा मंत्री अरविंद पांडे उत्तरा बहुगुणा से माफी मांग कर समस्या के समाधान की बात कह रहे हैं, लेकिन उत्तरा का कहना है कि जब अपमान मुख्यमंत्री ने किया है, तो माफी भी उन्हें ही मांगनी चाहिए। फिलहाल ऐसा लगता तो नहीं कि एक अदना सी शिक्षिका के आगे सत्ता का अहंकार झुकेगा, लेकिन इस प्रकरण से कुछ सवाल जरूर पैदा हो गए हैं। उत्तरा बहुगुणा के तबादले की बात निकली तो बात मुख्यमंत्री की शिक्षिका पत्नी तक भी पहुंची। सवाल यह भी है कि बहुगुणा को कर्मचारी आचार संहिता के उल्लंघन के आरोप में शिक्षा विभाग ने सस्पेंड किया था, तो अब शिक्षा मंत्री की माफी के बाद यह आरोप उन पर से हट जाएगा। सबसे बड़ा सवाल यह कि क्या उत्तरा बहुगुणा की नौकरी बहाली या मंत्री के माफी मांगने से उनका आत्मसम्मान लौटाया जा सकता है। क्या आरएसएस के संस्कारों में महिलाओं से व्यवहार का संस्कार मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने नहीं सीखा।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि. सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 01 अगस्त से 07 अगस्त 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।